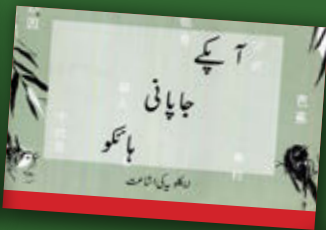
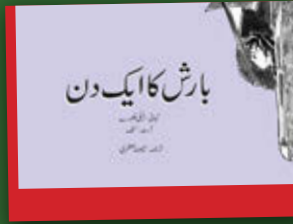


# चकमक



मूल्य ₹50

1



₹ 120/-  
~~240/-~~  
50% off

## छोटे बच्चों के लिए उर्दू किताबों का सेट

एकलव्य की जानिब से  
शाय शुदा 13 किताबों का एक  
खूबसूरत और निहायत अहम सेट  
बच्चों की लोक कहानियों, गीतों और  
खेलों का शानदार बातस्वीर मजमूआ।  
कीमत सिर्फ ₹120( डाक खर्च अलग)

ऑर्डर करने के लिए [pitara@eklavya.in](mailto:pitara@eklavya.in)  
पर राबता क्रायम कर सकते हैं या हमें फ़ोन कर सकते हैं  
+91 755 297 7770-71-72-73

\*नोट: 20 सेट या उससे ज़ाएद(यानी अधिक) ऑर्डर पर डाक खर्च नहीं लिया जाएगा  
[https://www.pitarakart.in/Urdu\\_Kitabon\\_ka\\_Set](https://www.pitarakart.in/Urdu_Kitabon_ka_Set)



एकलव्य

# चकमक

## इस बार

जब अँधेरे में रह जाते थे - रुद्राशीष चक्रवर्ती - 4

कार्बन - एक मज़ेदार तत्व - उमा सुधीर - 8

क्यों-क्यों - 11

मक्के के फूल - के आर शर्मा - 15

तुम भी बनाओ - भुट्टे की चाट - सजिता नायर - 17

पीली तितली - सिराज अहमद - 18

भूलभुलैया - 19

बारिश का मौसम - प्रीति - 20

चीड़ के पेड़ - गौरांशी चमोली - 23

किताबें कुछ कहती हैं - 24

तुम भी जानो - 26

बोरेवाला - जयश्री कलाथिल - 27

चमगादड़ करोड़ों वर्षों से वायरसों को गच्चा... - 31

मेरा पन्ना - 32

माथापच्ची - 38

चित्रपहेली - 41

ये हैं क्या? - आलोक कुमार मिश्र - 43

मेरी बात सुनो! - रोहन चक्रवर्ती - 44

आवरण चित्र: मानवी मुले, के जी टू, सैमीटन स्कूल, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश

### सम्पादन

विनता विश्वनाथन

### सह सम्पादक

कविता तिवारी

सजिता नायर

कनक शशि

### विज्ञान सलाहकार

सुशील जोशी

### डिज़ाइन

कनक शशि

### सलाहकार

सी एन सुब्रह्मण्यम्

शशि सबलोक

### सहयोग

अभिषेक दूबे

### वितरण

ज्ञानक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50

वार्षिक : ₹ 500

तीन साल : ₹ 1350

आजीवन : ₹ 6000

सभी डाक खर्च हम देंगे

### एकलव्य

एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026

फोन: +91 755 2977770 से 3 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in

वेबसाइट: <https://www eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine>

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।

एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:

बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल  
खाता नम्बर - 10107770248

IFSC कोड - SBIN0003867

कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी

accounts.pitara@eklavya.in पर जरूर दें।

# जब अँधेरे में रह जाते थे

रुद्राशीष चक्रवर्ती  
चित्र: राही डे रॉय



अक्टूबर की एक शाम की बात है। गुरुदास पार्क से सटी सड़क से बाईं ओर मुड़ते ही मुझे ऐसा लगा जैसे मैं एक दशक या उससे भी ज़्यादा पीछे के समय में लौट गया हूँ। कोलकाता में जिस मोड़ से मेरे मोहल्ले में मुड़ते हैं उसके शुरुआत में गुरुदास कॉलेज के सामने सात घरों की एक लाइन है। इसके एक छोर पर दूध की डेयरी और दूसरे छोर पर एक छोटा-सा सरकारी दवाखाना है।

उस शाम वो पूरा मोहल्ला अनजाना-सा लग रहा था। लेकिन साथ ही साथ जाना-पहचाना भी लग रहा था।

उस समय उस पूरे इलाके में बिजली नहीं थी। और मज़े की बात यह है कि यह दुर्गाष्टमी के दिन की बात थी। दुर्गाष्टमी यानी पश्चिम बंगाल में पाँच दिनों तक चलने वाली दुर्गा पूजा का तीसरा दिन। हर साल की तरह इस साल भी हमारे महल्ले ने दुर्गा पूजा का आयोजन किया था। त्यौहार के इन दिनों में पण्डाल में आने वाली भीड़ के मनोरंजन के लिए मेला भी लगा था।

लेकिन मुख्य पूजा पण्डाल और दुर्गा की मूर्ति के अलावा पूरे पार्क में अँधेरा छाया हुआ था। इन दोनों जगहों पर जनरेटर से जल रहीं कुछ छुटपुट बत्तियाँ जगमगा रही थीं।

मुझे याद नहीं कि दुर्गा पूजा के दौरान आखिरी बार हमारे मोहल्ले में बिजली कटौती कब हुई थी। सच कहूँ तो मुझे यह भी याद नहीं कि इसके पहले आखिरी बार हमारे मोहल्ले में बिजली कटौती कब हुई थी।

लेकिन दो दशक पहले जब मैं स्कूल में था तब ऐसा बिलकुल नहीं था। यहाँ तक कि एक दशक पहले जब मैं कॉलेज में था तब भी स्थिति एकदम अलग थी। उन दिनों रात-रात भर बिजली की कटौती होती। तब कोलकाता की उस भयानक उमस वाली गर्मी से खुद को बचाने के लिए मैं एक ही तकनीक अपनाता – सोने के लिए हाथ वाले पंखे से हवा करना।

मुझे लगता है कि नब्बे के दशक में कोलकाता में मेरे साथ बड़े हो रहे अधिकांश बच्चे खुद को बचाने की इस तकनीक में माहिर थे। यह उस स्थिति पर मन की जीत थी। और शहर में रहने वाले मेरे साथ के अधिकांश लोग इसे भूल भी गए हैं। इनमें मैं भी शामिल हूँ।

पिछले कुछ सालों से हमारे महल्ले में बिजली की कटौती बहुत ही कम होती थी। और हर घड़ी साथ रहने वाला 'ताल पातार पाखा' (ताड़ के पत्ते वाला हाथपंखा) हमारे बिस्तर के बगल

की मेज़ों से गायब होने लगा था। पहले के समय में बंगाली घर-परिवारों में ये पंखे इस कदर इस्तेमाल किए जाते थे कि घर के हर सदस्य के पास अपना एक अलग हाथपंखा होता था। और हम इन्हें इतना ज़्यादा इस्तेमाल करते थे कि कुछ ही हफ्तों में नया पंखा भी घिसापिटा लगने लगता था।

मुझे याद है एक बार मैंने इनके बारे में एक चुटकुला पढ़ा था, जो कुछ इस तरह था। दोपहर का समय था। बिजली की कटौती ने पहले से हो रही दम घोंटने वाली गर्मी को असहनीय बना दिया था। दो दोस्त ताज़ी हवा लेने की कोशिश करते बालकनी में बैठे बात कर रहे थे। उनमें से एक दोस्त हाथपंखे का इस्तेमाल कर रहा था। उसका दोस्त कुछ देर पंखे को देखता है और बोलता है, "यह पंखा तो काफी अच्छा लग रहा है।" पंखे का मालिक कहता है, "हाँ, ये तो है। मैंने इसे दो महीने पहले लिया था और तब से मैं लगातार इसे इस्तेमाल कर रहा हूँ। पर इसे देखकर ऐसा नहीं लगता, है ना? ये काफी मज़बूत है।" उसका दोस्त मुस्कराते हुए बोला, "इसमें कौन-सी बड़ी बात है। मैं अपने घर पर जो पंखा इस्तेमाल करता हूँ वह तो दस साल पुराना है।" "क्या





यार, क्यों मज़ाक कर रहा है?”  
“नहीं, सच में।” “पर यह कैसे हो सकता है?” “सीधी-सी बात है, मैं एक हाथ में पंखे को पकड़कर रखता हूँ और अपने सर को इधर से उधर घुमाता हूँ। तुझे पता है इससे मैं बड़ी जल्दी ठण्डा महसूस करता हूँ...”

घर पहुँचने पर मैं सीढ़ियों से ऊपर अपने कमरे में गया।

घर का पूरा पहला माला शरद ऋतु की शाम की ओझल होती हुई रोशनी से नहाया हुआ था। सभी कोनों से निकलता हुआ अँधेरा तेज़ी-से हर ओर फैल रहा था। कुछेक खिड़कियाँ खुली हुई थीं। उनसे भी अँधेरा ही झाँक रहा था। बाहर पेड़ों पर अपने घर लौटती चिड़ियों की चहचहाहट सुनाई दे रही थी। हमेशा से शाम के समय बिजली गुल होने पर हमारे मोहल्ले में यह जादुई असर दिखाई पड़ता था। बिजली की रोशनियों के खलल से दूर यह एक ऐसा समय होता जब लगता कि आँखों को थोड़ा आराम दें, और सारा काम अपने कानों को करने दें।

मैं पहले माले की अपनी बालकनी में गया और अपने मोहल्ले से गुज़रती गली को देखने लगा, जिसके दूसरे छोर पर कॉलेज है। अँधेरे ने पहले ही पूजा पण्डाल को अपनी गिरफ्त में ले लिया था। और तभी मुझे अचानक से एक बेंच की याद आई।

कुछ सालों पहले तक हमारी उस बालकनी में लकड़ी की एक बेंच हुआ करती थी ताकि बिजली गुल होने पर लोग वहाँ बैठकर ताज़ी हवा ले सकें। यदि बिजली की यह कटौती सूरज डूबने के बाद होती तो बालकनी की रैलिंग के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं देता। ऐसे में समय काटने का सबसे अच्छा तरीका होता अपने हाथपंखे की हवा का मज़ा लेते हुए किसी के साथ गपशप करना। ज़ाहिर है कि उस हाथ को इस मज़े का एहसास न होता जिसे पंखा झलना होता।

ऐसी कई शामों में मेरी माँ वहाँ बैठा करतीं। कई बार तो एक-एक घण्टे तक। मैं अक्सर उनके साथ बैठ जाया करता और उनसे उनके बचपन के दिनों की कहानियाँ सुनाने को कहता। इससे ज़्यादा खुशी उन्हें और किसी चीज़ से नहीं मिलती।

लेकिन अब वह बेंच घर के पीछे के किसी कमरे में उपेक्षित-सी पड़ी है। कई बार मैं उस पर अपने कपड़े रखा करता हूँ। लेकिन ना तो मैं उस पर बैठता हूँ, और ना ही माँ।

अचानक से मुझे सामने कॉलेज की बिल्डिंग की दीवाल पर सफेद रोशनी की एक चमक दिखाई दी। वह रोशनी हमारे बगल वाली बिल्डिंग की खुली हुई खिड़की से आ रही थी।

ओह, इसका मतलब बिजली आ गई।

बिजली के खम्भों में भी जीवन वापिस लौट रहा था। उन लैम्पों की रोशनी सफेद से पीले और फिर नारंगी रंग में बदल रही थी। हर गुज़रते हुए लम्हे के साथ वह चमकीली होती जा रही थी। अँधेरे पर ज़रा भी दया दिखाए बिना और उस अँधेरी शाम की चुप्पी को तोड़ते हुए वह धीरे-धीरे अपने नीचे की गली के उस हिस्से को नारंगी रोशनी से भरती जा रही थीं।

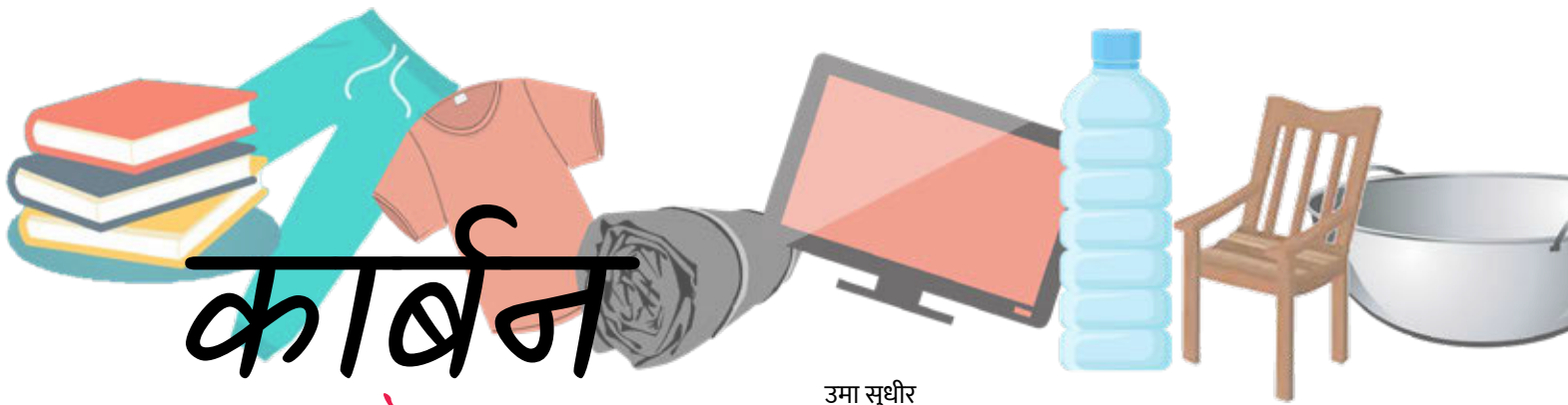
तभी अचानक मेरा ध्यान केंदू पर गया। वो गली के बीचोंबीच हमारे घर के बिल्कुल बगल वाले लैम्प पोस्ट के नीचे लेटा था। उसका पीला-नारंगी शरीर उस रोशनी के नीचे और भी नारंगी होता जा रहा था।

केंदू हमारे मोहल्ले में रहने वाला कुत्ता था। जब मैं काम के सिलसिले में कोलकाता से बाहर रहता हूँ तो वो मेरे माँ-बाबा का साथ देता है और मछली के टुकड़े खाता है। मेरे बाबा रोज़ दोपहर व रात के खाने में से उसके लिए मछली के टुकड़े बचाकर रखते हैं। हो सकता है उसने मेरी माँ से एक-दो कहानियाँ भी सुनी हों।



अनुवाद: कविता तिवारी





# कार्बन

## - एक मज़ेदार तत्व

उमा सुधीर

अनुवाद: सुशील जोशी

जब मैं स्कूल में थी, यदि उस समय कोई यह कहता/कहती कि आगे चलकर मैं कार्बनिक रसायन शास्त्र पसन्द करने लगूँगी (और इतना पसन्द करूँगी कि उसमें पीएचडी कर लूँगी), तो मैं आसपास के पागलखानों में खाली जगह ढूँढ़ने निकल जाती। कार्बनिक रसायन शास्त्र के प्रति मेरा प्रेम कॉलेज के मेरे शिक्षकों के कारण और जो कुछ मैंने बाद में अपने आप सीखा उसके कारण है। इसने मुझे कार्बन नाम के तत्व का प्रशंसक बना दिया। तुम्हें थोड़ा अन्दाज़ा देने की कोशिश करती हूँ कि ऐसा क्यों है।

### जहाँ देखो वहाँ कार्बन

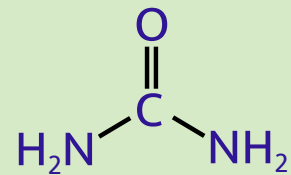
जिस कमरे में बैठे हो, उस पर ज़रा नज़र दौड़ाओ और जो कुछ भी दिखता है उसकी एक सूची बनाओ। यह जो चकमक तुम पढ़ रहे हो, उसी से शुरू करो। और जो कपड़े तुमने पहने हैं, उन्हें मत भूलना। तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि तुम्हारे आसपास की ज्यादातर चीज़ें कार्बन से बनी हैं – लेकिन सिर्फ कार्बन से नहीं। हाँ, यदि तुम इतने रईस हो कि तुम्हारे पास हीरा हो, तो बात अलग है क्योंकि हीरे सिर्फ कार्बन के बने होते हैं! लगभग शुद्ध कार्बन तुम्हें कोयले और धुएँ की कालिख में भी मिल जाएगा।

अचरज तो यह है कि हमारे द्वारा इस्तेमाल की गई कई चीज़ों का आधार कार्बन होता है। जो भोजन हम खाते हैं, जो कपड़े हम पहनते हैं, हमारा लकड़ी का फर्नीचर, हमारे रज़ाई-गद्दे, कचरे के ढेरों में पड़ी प्लास्टिक की चीज़ें, किताबें जो हम पढ़ते हैं, और कई

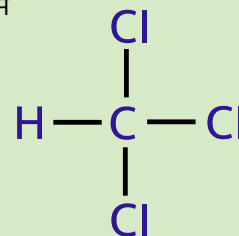
दवाइयाँ...सूची बहुत लम्बी है। संगमरमर और स्टील में भी कार्बन होता है। और जानते हो, लोहे में जो थोड़ी-सी कार्बन की मिलावट होती है, वही उसे इतना सख्त और विशेष बनाती है कि उससे तमाम उपकरण और औज़ार बनाए जाते हैं। दरअसल, कार्बन इतने यौगिकों में पाया जाता है कि कार्बनिक रसायन शास्त्र में मूलतः कार्बन के यौगिकों का अध्ययन किया जाता है।

तो कार्बन को इतना हरफनमौला कौन बनाता है? पहली चीज़ तो यह है कि कार्बन की संयोजकता 4 होती है। इसका मतलब है कि कार्बन अधिकतम चार बन्धन बना सकता है (चित्र - 1)। कार्बन बहुत छोटा परमाणु है, इसलिए यह बहुत मज़बूत बन्धन बना सकता है। कई बार कार्बन का एक परमाणु एक साथ चार अलग-अलग तत्वों के साथ बन्धन बना लेता है।

यूरिया



क्लोरोफॉर्म



चित्र - 1



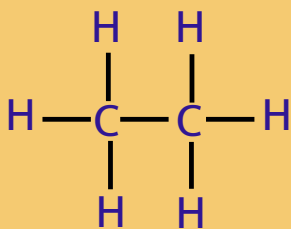


अलबत्ता, कार्बन के बारे में सबसे हैरत की बात यह है कि इसमें अन्य कार्बन परमाणुओं के साथ बन्धन बनाने की प्रवृत्ति होती है। चूँकि यह एक बार में चार बन्धन बना सकता है, इसलिए यह शृंखलाएँ बना लेता है – एक-एक शृंखला में हजारों परमाणु हो सकते हैं! यह अन्य कार्बन परमाणुओं से जुड़कर लम्बी सीधी शृंखला बना सकता है, शाखाओं वाली

शृंखला बना लेता है, छल्ले बना लेता है, और तमाम किस्म की अन्य आकृतियाँ बना लेता है। और तो और यह तीन, चार, पाँच, छह और उससे भी अधिक परमाणुओं के छल्ले बना लेता है। कई यौगिकों में तो एक से अधिक छल्ले होते हैं। कोई अन्य तत्व इस मामले में कार्बन की बराबरी करना तो दूर, इसके आसपास भी नहीं पहुँचता।

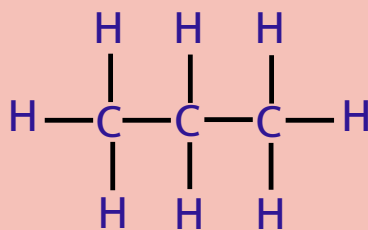
### एक, दो, तीन, चार..

इस तरह से बने कुछ सुन्दर यौगिकों के बारे में बताती हूँ। एक कार्बन किसी अन्य कार्बन से इस तरह जुड़ सकता है:



चित्र - 2

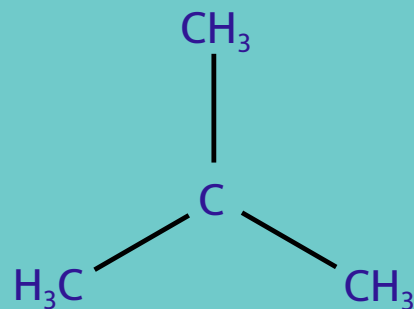
एक कार्बन दो कार्बन से इस तरह जुड़ सकता है:



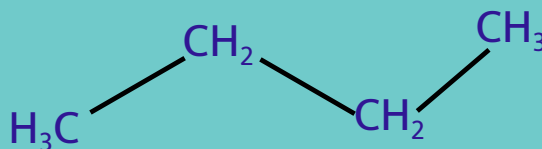
चित्र - 3

और तीन अन्य कार्बन से कुछ इस तरह जुड़ सकता है:

ब्यूटेन (शाखाओं के साथ)



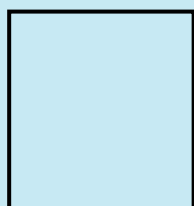
ब्यूटेन (बिना शाखा के)



चित्र - 4

यह चार-कार्बन का छल्ला है। चार कार्बन जब जुड़ते हैं तो शाखाएँ भी बन सकती है या छल्ला भी।

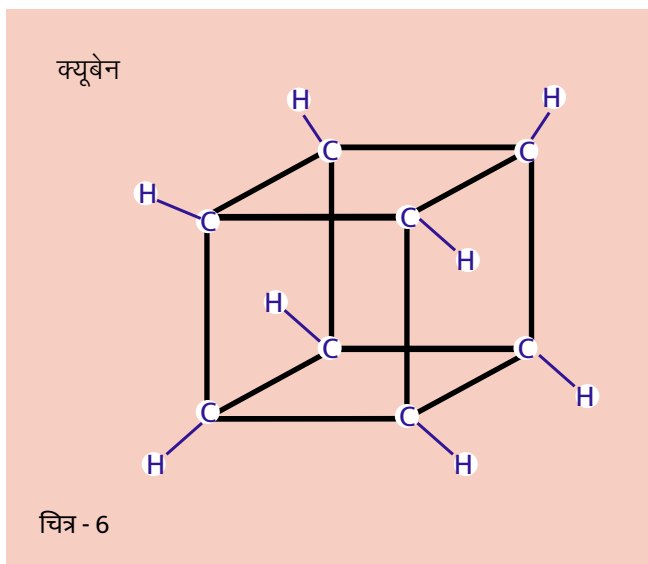
चित्र - 5



हम मानकर चल सकते हैं कि हर कोने में कार्बन है व अगर और कोई तत्व नहीं दिखाया गया है तो कार्बन की बाकी संयोजकता हाइड्रोजन के परमाणु से पूरी हो रही है।

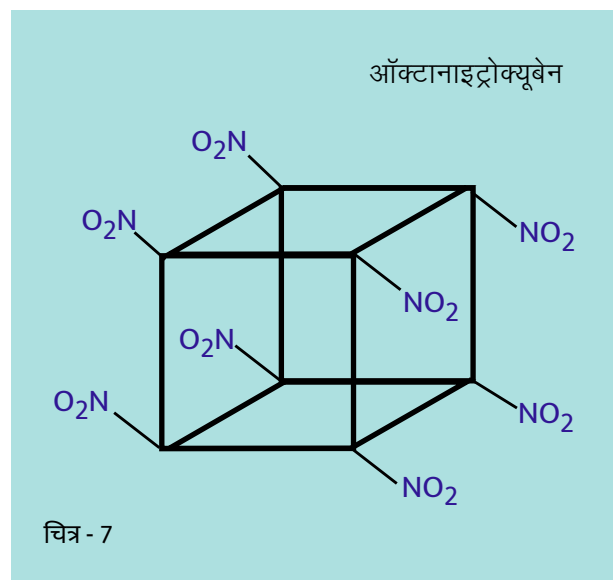
कार्बनिक रसायन शास्त्रियों को चुनौतियाँ लुभाती हैं – उन्होंने यह पता करने की चुनौती स्वीकार की कि एक ही जगह पर चार-कार्बन के अधिक से अधिक छल्ले कैसे दिखेंगे।

तो, एक चार-कार्बन छल्ला वर्गाकार होगा और कोई घन छह वर्गों से यानी आठ कार्बन से बना होता है। जैसा कि तुम देख ही सकते हो, एक-एक कार्बन परमाणु आठ कोनों पर होगा और वह तीन अन्य कार्बन परमाणुओं से जुड़ा होगा। इस तरह से प्रत्येक कार्बन परमाणु तीन कार्बन परमाणुओं से और एक हाइड्रोजन परमाणु से जुड़ा है। घन में कुल आठ कार्बन और आठ हाइड्रोजन परमाणु हैं। इस तरह के कार्बन यौगिकों के साथ प्रत्यय 'एन' लगाया जाता है। इस यौगिक को क्यूबेन कहते हैं।

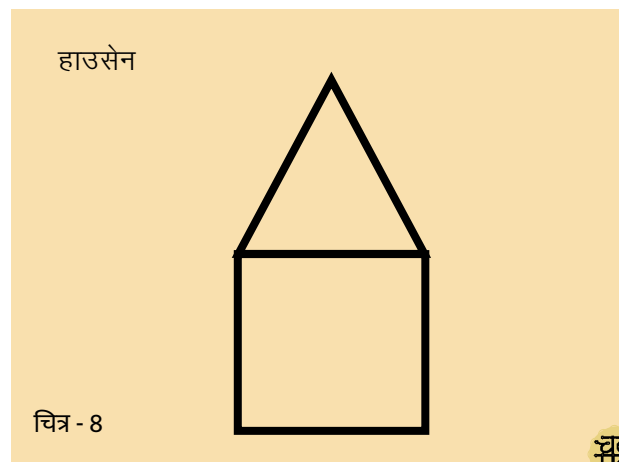


यहाँ एक और दिलचस्प पेंच है। जब रसायनज्ञों ने क्यूबेन के हाइड्रोजन परमाणु की जगह नाइट्रो समूह (यानी - NO<sub>2</sub>) जोड़ दिया (चित्र - 7) तो बना ऑक्टानाइट्रोक््यूबेन (यानी कि आठ नाइट्रो समूह वाला ब्यूटेन)। ऑक्टा मतलब आठ और यह (उपसर्ग) ऑक्टोपस में भी लगता है चूँकि इस जानवर की आठ-आठ भुजाएँ होती हैं। इस यौगिक पर नाइट्रो समूह जुड़ जाने पर यह माचिस की तीली के मसाले

जैसा बन जाता है। यह ज्वलनशील तो होता ही है, इसमें मौजूद ऑक्सीजन की वजह से यह निर्वात यानी हवा की अनुपस्थिति में भी जल सकता है।



तो, कार्बनिक रसायन शास्त्री इस तरह के यौगिक बनाने में खूब मज़ा लेते हैं। कई बार वे बहुत बचकाने भी होते हैं। तुम जानते ही हो कि छोटे बच्चे घर की तस्वीर कैसे बनाते हैं – एक सीधा-सादा वर्ग और उसके ऊपर छत दर्शाने के लिए एक तिकोना। हमारे वैज्ञानिकों ने यही घर कार्बन को लेकर बनाया (संयोजकताओं को पूरा करने के लिए हाइड्रोजन का उपयोग करके) – और इसे नाम दिया हाउसेन।



# क्यों-क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था—  
"हम सभी ने अपनी जिन्दगी में कभी ना कभी झूठ बोला है। ऐसा कौन-सा झूठ है जिस पर तुम्हें कभी अफसोस नहीं हुआ, और क्यों?"

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें अपने जवाब लिख भेजना।

अगली बार के लिए सवाल है —  
पिछले कुछ महीनों से स्कूल बन्द हैं। इस दौरान स्कूल की कौन-सी बात तुम सबसे ज़्यादा मिस करते हो और कौन-सी बात बिलकुल मिस नहीं करते, और क्यों?

अपने जवाब तुम हमें लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर भेज सकते हो।

जवाब तुम हमें [chakmak@eklavya.in](mailto:chakmak@eklavya.in) पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर वॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है:

## चकमक

एकलव्य फाउंडेशन  
जमनालाल बजाज परिसर  
जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास  
भोपाल - 462026, मध्य प्रदेश

मेरी कक्षा में राहुल नाम का एक लड़का है। वो हमसे झगड़ा करता है। एक दिन वो मुझसे झगड़ा किया और हमको मार दिया। दो दिन बाद फिर ऐसे ही हमको परेशान कर रहा था। एक दिन मैंने सर से झूठ बोलकर उसको पिटवा दिया। और उस दिन से वह मुझसे झगड़ा करना छोड़ दिया। इस झूठ का मुझे अफसोस नहीं है।

अमन कुमार चौरसिया  
छठवीं, ग्राम बड़हुलिया, परिवर्तन सेंटर,  
सिवान, बिहार

एक बार मेरी नानी ने मेरे जन्मदिन पर एक फ्रॉक उपहार में दी थी। मैंने बहुत उत्साह से तोहफा खोला। पर मुझे उसका रंग और बनावट पसन्द नहीं आई। जब मेरी नानी ने पूछा कि कैसी लगी तो मैंने उन्हें झप्पी डालकर बोला बहुत अच्छी है। इस झूठ का मुझे कोई अफसोस नहीं है।

अमायरा पटियाल  
तीसरी 'ए', द हेरिटेज स्कूल  
वसन्त कुंज, नई दिल्ली

जब मैं सातवीं क्लास की परीक्षा दे रही थी तो मेरी एक सहपाठी ने मुझे कुछ प्रश्नों के उत्तर बताने को कहा। मैंने कहा कि मुझे भी इन प्रश्नों के उत्तर नहीं पता। ये बात मैंने झूठ कही। लेकिन मुझे इस बात का कोई अफसोस नहीं हुआ क्योंकि वह कभी मन लगाकर नहीं पढ़ती थी। और मैं नहीं चाहती थी कि वह बिना पढ़े पास हो।

नीति झा  
बिहार बाल भवन किलकारी  
पटना, बिहार

जब मेरे घर में सब्ज़ी कम होती है और मेरी भाभी लेने आती हैं तो मैं मना कर देती हूँ। क्योंकि अभी मेरी मम्मी ने खाना नहीं खाया होता है। इसीलिए मैंने झूठ बोला और मुझे इस झूठ का कोई अफसोस नहीं है क्योंकि मेरी भाभी सब्ज़ी बना सकती हैं।

सोनम  
14 वर्ष, मुरारी भडग सेंटर  
अपना स्कूल, कानपुर, उत्तर प्रदेश

एक बार मेरी छोटी बहन श्रेयजल अपने कमरे में खेल रही थी। तभी उसे ना जाने क्या शरारत सूझी। उसने छोटा स्टूल लिया और उसे बड़े टीवी के थोड़े ऊँचे मेज़ के पास लगाया। और उस पर चढ़ने लगी। लगभग दो मिनट के असफल प्रयास के बाद वह टीवी के साथ नीचे गिर गई। जगह ज़्यादा ऊँची ना होने की वजह से बहन को तो ज़्यादा चोट नहीं आई लेकिन टीवी की हड्डियाँ (आगे का फ्रेम, पीछे का कूबड़ और शीशी) टूट गईं। फिर मेरी बहन ज़ोर-ज़ोर से रोने लग गई। आवाज़ सुनकर अम्मा-पापा दौड़े आए और पूछने लगे क्या हुआ। तो मैंने सारा घटनाक्रम सुना दिया। और कहा कि मुझसे टूटकर टीवी श्रेयजल के ऊपर गिर गया। जिससे उसे हल्की चोट आई और वह रोने लगी। पहले तो उन्होंने डाँटा। फिर प्यार से समझाया कि आयु घर की किसी चीज़ के साथ बिना पूछे छेड़खानी नहीं करनी चाहिए। मुझे इस झूठ का ज़रा भी अफसोस नहीं।

जब यह बात याद आती है तो बहुत हँसी आती है। जिसको समझना था वो शैतान तो उस समय नासमझ थी।

झूठ-झूठ बोलो ना  
टॉफी के पैकेट खोलो ना  
झूठ बोल पैसा कमाया  
दोस्तों को भी मज़े कराया

आयुष कुमार सिंह  
किलकारी बाल भवन, पटना, बिहार

एक बार मेरी दोस्त की कॉपी का काम पूरा नहीं था तो मैंने उसकी कॉपी का काम पूरा किया। जब टीचर ने पूछा कि यह काम तुमने किया है या इसने, तो मैंने कहा कि उसने किया है। इससे वह सज़ा से बच गई। मुझे बहुत खुशी हुई और कभी इस बात का अफसोस नहीं हुआ।

मुन्नी कुमारी, दसवीं, मंजिल संस्था, दिल्ली

मैंने एक बार फुटबॉल फोड़ दी थी जो कुछ दिन पहले ही खरीदी थी। डाँट खाने के डर से मैंने बॉल को फुलाकर वापिस उसकी जगह पर रख दिया ताकि किसी को पता ना चले। इस झूठ का मुझे कोई अफसोस नहीं।

अक्षत  
सातवीं, दीपालया कम्युनिटी लाइब्रेरी, दिल्ली



जब मैं दूसरी कक्षा में थी तो मेरी एक सहेली का कम्पास बॉक्स गुम हो गया था। मेरी सहेली के पिताजी बहुत गुस्से वाले थे। इसलिए उसे अपने पिताजी से मार खाने का डर था। तो हम पाँच सहेलियों ने चुपचाप अपने-अपने मनी बैंक से दस-दस रुपए निकाले। और पचास रुपए का नया कम्पास बॉक्स ले लिया। अचानक दूसरे दिन हमें उसका पुराना वाला कम्पास बॉक्स मिल गया। हमने नया वाला कम्पास बॉक्स दुकानदार को वापिस कर दिया। नए कम्पास बॉक्स के लिए मैंने घर में बिना बताए पैसे लिए थे। पर इस झूठ का मुझे अफसोस नहीं है क्योंकि मैंने मनी बैंक से झूठ बोलकर निकाले रुपए बाद में वापिस डाल दिए थे।

प्रज्ञा शहा  
चौथी, प्रगत शिक्षण संस्थान  
फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

मैंने अपने दोस्त को खाना दिया और जब मेरी माँ ने पूछा तो मैंने झूठ कह दिया। इस बात का मुझे अफसोस बिलकुल नहीं है क्योंकि मेरे खाने से किसी का पेट भर जाए ये मुझे पसन्द है।

वेदान्त पाण्डे  
तीसरी, द हेरिटेज स्कूल, वसन्त कुंज, दिल्ली

जब मैं पाँच साल का था तब मेरे पिताजी का हाथ टूट गया था। डॉक्टर ने उन्हें कहा था कैल्सियम के सोर्स लेने को। पर पापा कैल्सियम के सोर्स नहीं लेते थे। इसलिए एक दिन मैंने पापा से झूठ बोला कि पापा मुझे भी कैल्सियम के सोर्स खाने का मन कर रहा है। इसलिए पापा ने जितने भी कैल्सियम के सोर्स हैं उन सब को मेरे लिए मँगवा दिया। फिर मैंने खाने से इन्कार कर दिया। जब पापा ने मुझे खाने के लिए कहा तो मैंने कहा कि पापा मैं तब ही खाऊँगा जब आप खाएँगे। तो पापा ने फिर बिन कुछ कहे कैल्सियम के सोर्स खाए और मैंने भी कुछ नहीं कहा।

गणपत हिमांशु, छठवीं, टेंडर हार्ट्स  
इंटरनेशनल स्कूल, पटना, बिहार

मैं अपनी मम्मी के कमरे में गया और बॉक्स में से कुछ चॉकलेट निकालकर खा लीं। उन्होंने पूछा तो मैंने झूठ बोल दिया कि मैंने नहीं खाई। मुझे नहीं लगता कि मैंने कुछ गलत किया क्योंकि इससे किसी का नुकसान नहीं हुआ।

आदित्यवर्धन अग्रवाल  
पहली, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

एक दिन मैं स्कूल गई तो उन बच्चों को वापिस भगा रहे थे जिनकी फीस जमा नहीं थी। मेरी भी फीस जमा नहीं थी। तो मैंने घर आकर पापा को फीस जमा करने के लिए कहा। तो पापा ने कहा कि अभी पैसे नहीं हैं। कुछ दिन बाद जमा करेंगे। मुझे पता था स्कूल से मुझे भगा सकते हैं, पर मैं स्कूल जाना चाहती थी। तो मैं स्कूल चली गई। और जब प्रिंसिपल मैडम ने पूछा तो मैंने झूठ बोल दिया कि पापा आज फीस जमा करने आएँगे, जबकि पापा नहीं आने वाले थे। इस झूठ का मुझे कोई अफसोस नहीं हुआ, क्योंकि इसकी वजह से मैं स्कूल जा पाई।

शकीला, स्वतंत्र तालीम संस्था, ग्राम  
रामदुआरी, सीतापुर, उत्तर प्रदेश

एक दिन मैंने अपने एक दोस्त की चॉकलेट खा ली। फिर उसने पूछा तो मैंने झूठ कहा क्योंकि झूठ नहीं बोलता तो हमारी दोस्ती टूट जाती। इसलिए मुझे अफसोस नहीं हुआ।

राहुल नेगी, पाँचवीं, एसडीएमसी स्कूल, हौज खास, दिल्ली

मेरी माँ जब नानी के यहाँ जा रही थीं तो हमें बीस रुपया दी थीं और मेरी दीदी को दस रुपया दी थीं। थोड़ी देर बाद दीदी हमसे बोलीं कि तुमको कितना रुपया दी है तो मैं बोली कि मुझे दस रुपया दी है। मैं झूठ इसलिए बोली क्योंकि उसे बहुत बुरा लगता। फिर वो माँ से पैसा माँगती और झगड़तीं। इस झूठ का हमें अफसोस नहीं है।

अलका कुमारी जयसवाल  
सातवीं, ग्राम बड़हुलिया, परिवर्तन सेंटर  
सिवान, बिहार

जब मैं स्कूल जाती थी तो कोई दिन ऐसा होता था कि स्कूल जाने का मन नहीं करता था। तो मैं आधे रास्ते से वापिस आ जाती थी। और घर पर मम्मी-पापा पूछते कि क्यों वापिस आ गई तो झूठ बोल देती थी कि बाबूजी ने बताया है कि आज हम लोगों का एक त्यौहार है। मम्मी-पापा मान भी जाते थे। इस झूठ का हमें अफसोस नहीं है क्योंकि हमें लगता है कि जो कुछ हम कर रहे हैं वो अच्छा कर रहे हैं।

आसमां बानो, स्वतंत्र तालीम,  
ग्राम रामदुआरी सीतापुर, उत्तर प्रदेश

वैसे मैं झूठ नहीं बोलती पर एक बार मुझे झूठ बोलना पड़ा। हमारे घर के बाहर कुत्तों को पकड़ने के लिए जानवरों की गाड़ी आई। हमने दोनों कुत्तों को घर के अन्दर बन्द कर लिया। जब उन्होंने पूछा तो मैंने और घरवालों ने कहा कि वह हमारे पालतू हैं। फिर वो चले गए। इस बात का मुझे अफसोस नहीं है।

टीशा  
तीसरी, द हेरिटेज स्कूल, वसन्त कुंज, नई दिल्ली

मैंने पैसे की बचत करने के लिए झूठ बोला है क्योंकि मेरे घर में सब लोग पैसे बिना मतलब और फिज़ूल में खर्च करते हैं। मैं पैसे जमा करती हूँ और नहीं चाहती हूँ कि उनका उपयोग हो। इसलिए मुझे इस झूठ पर अफसोस भी नहीं होता।

कीर्ति  
छठवीं, मुरारी भडण सेंटर, अपना स्कूल, कानपुर, उत्तर प्रदेश

एक बार मुझसे तार का प्लग टूट गया था। मैं बहुत डर गया। तभी मुझे एक तरकीब सूझी। मेरे भैया वहीं सो रहे थे। मैंने वह टूटा प्लग उनके पास रख दिया। और पापा को कहा कि देखिए भैया सोए हुए थे, और करवट बदले तो यह टूट गया। लेकिन यह झूठ बोलने के बाद मुझे अफसोस नहीं हुआ क्योंकि घर में पहले से एक नया प्लग रखा हुआ था। पापा तुरन्त उसे ठीक कर दिए। और यदि नया प्लग नहीं भी रहता, तो किसी को पता नहीं चल पाता। और भैया डाँट भी नहीं सुनते क्योंकि नींद में कहाँ किसी को कुछ पता चलता है।

राज आर्यन  
नौवीं, किलकारी बिहार बाल भवन, पटना, बिहार

झूठ

हरी थी मन भरी थी, मोतियों से जड़ी थी।  
राजाजी के बाग में दुशाला ओढ़े खड़ी थी।



के आर शर्मा

मौसम बरसात का हो और कहीं भुट्टे सिंकते दिखें तो हम उसका लुत्फ उठाने से नहीं चूकते। तुमने भुट्टा यानी मक्के का पौधा तो देखा ही होगा। पर क्या तुमने उसके फूल देखे हैं?

गेहूँ, गन्ना और धान की तरह ही मक्का भी घास परिवार का सदस्य है। मक्के में सबसे ऊपर एक मांजर झण्डे की भाँति लहराती रहती है। और भुट्टा तो मक्के के तने के बीच में गठान से निकलता है। भुट्टा हरे रंग की पत्तेनुमा रचनाओं में लिपटा होता है। तो मक्के के फूल कहाँ होते हैं?

मक्के में फूल वैसे तो नहीं दिखते जैसे गेंदा, गुलाब, गुड़हल में होते हैं। सबसे ऊपर की ओर जो मांजर हवा में लहराती रहती है वही मक्के का नर फूल है। परागकण यहीं बनते हैं। परागकण मांजर में देखे जा सकते हैं। अब सवाल आता है कि मादा फूल कहाँ होते हैं? दरअसल, जिसे हम भुट्टा कह रहे हैं वही मादा फूल है।

बात चाहे नर फूल की हो या मादा फूल की मक्के में दोनों ही बड़ी तादाद में होते हैं। मांजर, नर फूल के व भुट्टा मादा फूल के पुष्पक्रम हैं। नर व मादा फूल सिर्फ फूल नहीं हैं, बल्कि फूलों के गुच्छे हैं।

मांजर यानी नर फूल के अनेक फूलों में पुंकेसर हैं। तुमने मादा फूल (यानी भुट्टा) के पुष्पक्रम में रेशमी जुल्फों के माफिक रचनाएँ देखी होंगी। ये रचनाएँ मादा फूल के स्त्रीकेसर का ही भाग है। इसे हम वर्तिका (स्टाइल) कहते हैं। दिलचस्प बात यह कि मक्के की वर्तिका दुनिया के सभी फूलों की वर्तिका में सबसे लम्बी है। और हाँ, जितनी रेशमी बाल जैसी रचनाएँ, समझ लो उतने ही फूल। ये रेशमी वर्तिकाएँ भुट्टे में ऊपर की ओर से बाहर को निकली रहती हैं। अगर हम भुट्टे को छीलकर देखें तो पाएँगे कि ये हरेक दाने से जुड़ी होती हैं। इसलिए जितने दाने, उतने ही मक्के के फूल और उतनी ही वर्तिकाएँ।



नर फूल

वर्तिका का काम क्या है? मक्के के नर फूल से परागकण इन वर्तिकाओं पर गिरते हैं। मक्के के फूल में परागण हवा के ज़रिए होता है। मांजर हवा में लहराती रहती है और हवा के चलने से नर फूलों के परागकण मादा फूलों की वर्तिका पर गिरते हैं। ये परागकण अंकुरित होकर रेशमी वर्तिकाओं से गुज़रकर भुट्टे में प्रत्येक फूल के अण्डाशय तक पहुँचते हैं और उसे निषेचित (फर्टीलाइज़) करते हैं।

मक्के के फूल की बात चली है तो साथ ही फल की भी बात कर लेते हैं। मक्के का हर दाना एक



मादा फूल

फल है! मक्के के दाने पर फल का पतला-सा छिलका चढ़ा होता है। और इसी फल के छिलके से बीज का छिलका चिपका होता है। तो मक्के का दाना एक फल है जिसके अन्दर बीज है।

अब अगली बार जब मक्के के खेत में जाओ तो इसके पौधे की मांजर को ध्यान से देखना। भुट्टे को खोलकर इसकी लम्बी-लम्बी वर्तिकाओं पर गौर करना। देखना कैसे वर्तिकाएँ हर दाने से जुड़ी हैं। फिर उसे छीलकर सेंकना और उसका मज़ा लेना।

मक्के

बारिश का मौसम हो और मैं भुट्टा न खाऊँ ऐसा तो हो ही नहीं सकता। लेकिन यह पहली बार है कि बाहर जाकर सिंके भुट्टे खाने की बजाय मैं घर पर भुट्टे सेंक रही हूँ। तो मैंने सोचा कि क्यों ना इस बार भुट्टों से ही कुछ बनाया जाए। मैंने हमेशा की तरह इंटरनेट पर ढूँढ़ा कि क्या बनाया जा सकता है। आखिरकार मुझे एक चीज़ पसन्द आ ही गई— भुट्टे की चाट।

किसी भी चीज़ को बनाने के कई तरीके हो सकते हैं। नेट में देखे तरीके में मैंने अपने हिसाब से बदलाव किए और अलग-अलग स्वाद वाली चाट बनाई। हाँ, शुरुआत सबसे आसान वाले तरीके से की।

चाट बनाने के लिए सबसे पहले तो मुझे भुट्टे उबालने थे। इसके लिए मैंने भुट्टे के पत्ते हटाए और उन्हें आधे भाग में तोड़ा। फिर कुकर में पानी और नमक डालकर उबलने के लिए गैस पर चढ़ा दिया।

अब बारी थी चाट के लिए सब्ज़ियाँ काटने की। तो मैंने आधा प्याज़, एक हरी मिर्च, थोड़ा हरा धनिया और



तुम्हें भी आ  
बनी आ



आधा टमाटर काट लिया। जब भुट्टे उबल गए तो उन्हें कुकर से निकालकर थोड़ी देर ठण्डा होने रख दिया। ठण्डा होने पर मैंने पहले हाथ से दाने निकालने की कोशिश की। पर चूँकि उसमें ज्यादा वक्त लग रहा था तो फिर मैंने चाकू की मदद से दाने निकाले।

फिर एक बड़ी कटोरी में भुट्टे के दाने और कटी हुई सब्जियों को डालकर अच्छे-से मिलाया। लेकिन इस स्वाद से मैं बहुत खुश नहीं थी। तो फिर मैंने उसमें डाला 2 चम्मच नींबू का रस, 1 चम्मच मक्खन और 2 चम्मच चाट मसाला। फिर वापिस से सबको अच्छे-से चम्मच से मिक्स किया। बस तैयार हो गई मेरी भुट्टे की चाट।

मुझे और मेरी दोस्त को तो यह बहुत पसन्द आई। इसके बाद एक बार मैंने बिना सब्जी के चाट बनाई। फिर एक बार चीज़ डालकर भी बनाई। सोचती हूँ कि अगली बार चाट मसाले की जगह अलग-अलग मसाले डालकर देखूँगी। तुम भी कुछ अलग-अलग चीज़ों का प्रयोग करके चाट बना सकते हो। हमें बताना कि तुमने चाट कैसे बनाई। बस ध्यान रखना कि चाट बनाते समय किसी बड़े की मदद जरूर लेना।

मैंके

# भुट्टे की चाट

सजिता नायर





# पीली तितली

सिराज अहमद

चित्र: कनक शशि



अनाया चारा काटने वाली मशीन को घुमाती। और उसे गोल-गोल घूमता देख खुश हो जाती। तभी वहाँ एक खूबसूरत तितली आई। पीली रंग की तितली के पंखों के बीच की कत्थई धारियाँ बहुत सुन्दर थीं।

अनाया को रंग-बिरंगी तितलियाँ बेहद पसन्द हैं। उस तितली को देखकर उसका मन मचलने लगा। तभी तितली उसके आसपास डोलने लगी। अनाया भी खुश होकर उसके पीछे-पीछे घूमने लगी।

फिर तितली छप्पर के किनारे लगे एक बाँस पर बैठकर सुस्ताने लगी। वहाँ से उड़कर वह भूसे के ढेर पर जा बैठी, जैसे अनाया के साथ छुपनछुपाई खेल रही हो। अनाया भी उसे इधर-उधर ढूँढ़ने लगी। कुछ ही पल में वह उसके सिर के ऊपर नाचने लगी।

फिर तितली बाहर बँधी गाय के सींग पर जा बैठी। यह देखकर अनाया की हँसी छूट पड़ी। पर जैसे ही गाय ने सींग हिलाए वह उड़ गई और मशीन के आसपास डोलने लगी। कभी वह मशीन के हैंडल पर बैठ जाती तो कभी उसके आसपास घूमने लगती।

तभी तितली अनाया के एकदम पास से गुज़री। अनाया झूम उठी और उसके पीछे-पीछे हो ली। तितली फिर मशीन के चक्कर लगाने लगी। अनाया भी वहीं पास में खड़ी हो गई। तभी तितली मशीन की ब्लेड पर बैठ गई।

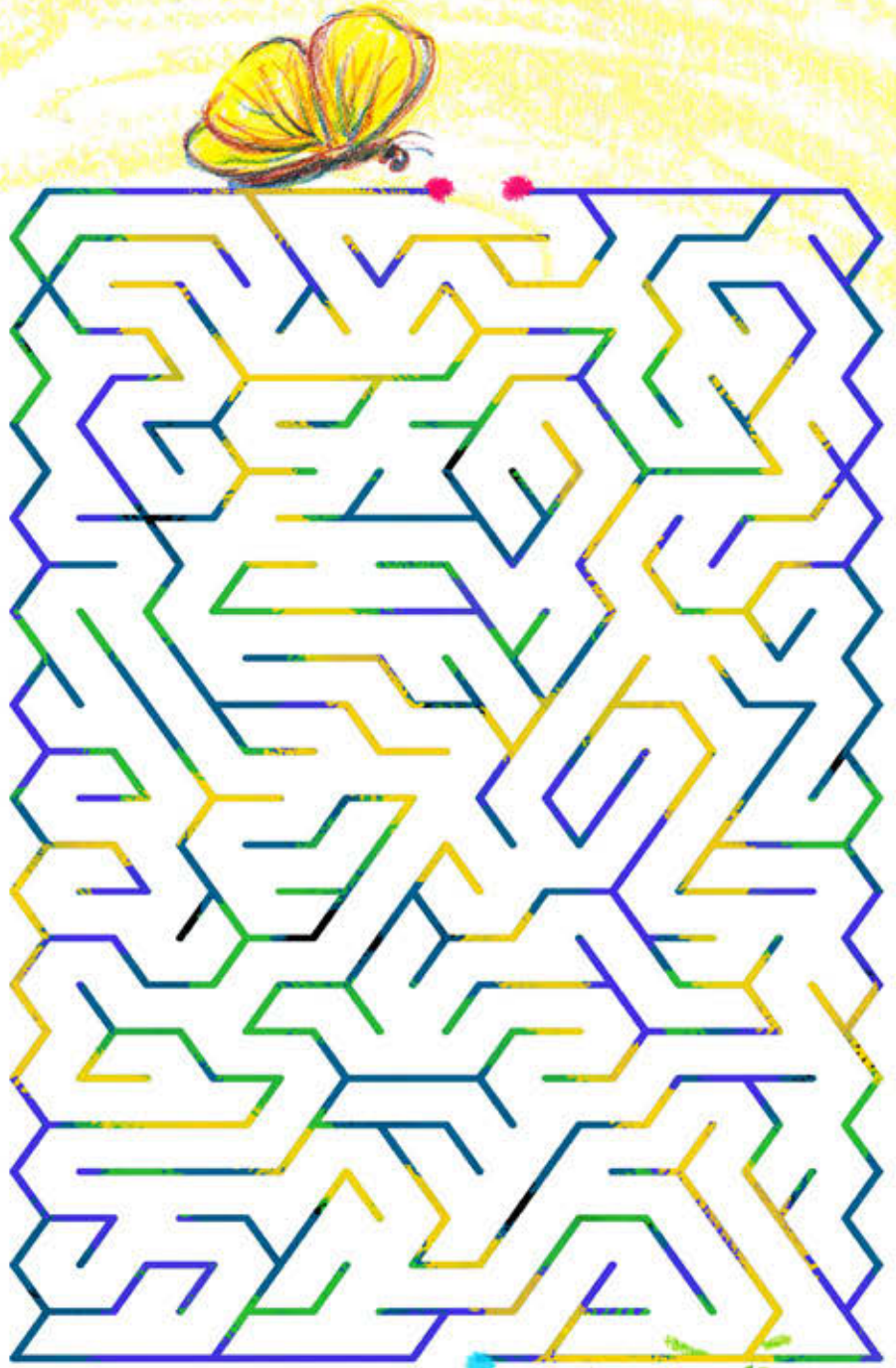
“अरे, यह कहाँ बैठ गई?” अनाया बुदबुदाई।

उसने “फुर्र-फुर्र, उड़-उड़” की आवाज़ निकाली। लेकिन तितली बेफिकर ब्लेड पर बैठी रही।

अनाया ने मशीन का हेंडल हल्के-से हिलाया। तितली फिर भी नहीं हिली। हरे रंग से रंगी हुई ब्लेड तितली को शायद पेड़ की डाली जैसी लग रही थी। वह उस पर चिपटकर बैठी थी। अनाया का हेंडल हिलाना तितली को हवा के झोंके जैसा लगता। वह उसका मज़ा लेती।

अनाया ने फिर अपनी उँगली से तितली को उड़ाने की कोशिश की। इस बार वो कामयाब भी हो गई। लेकिन तितली को उड़ाने के चक्कर में उसकी उँगली ब्लेड से छू गई। उँगली से खून ज़मीन पर टपक रहा था... और वह उड़ती हुई तितली को देखकर ताली बजाने में मगन थी।

ॐ



पिछले पाँच सालों से मैं बिल्डिंग में रह रही हूँ। अब जब भी बारिश के महीने आते हैं तो यह मालूम ही नहीं पड़ता कि बारिश हो रही है या नहीं। बिल्डिंग के अन्दर कहीं भी पानी नहीं गिरता है। हमें एहसास ही नहीं होता है कि बारिश आ रही है। बारिश आने पर हम बस बिल्डिंग के अन्दर ही रहते हैं। और यह कोई दिक्कत की बात भी नहीं है।

पर जब हम गंगा नगर में रहते थे तब बारिश होती तो पूरा घर गीला हो जाता था। छोटे-छोटे रोड भी पानी से भर जाते थे। मैं जिस बस्ती में रहती थी वहाँ हमारा पूरा घर मिट्टी का बना था। और मेरे घर की छत काली पन्नी से ढँकी थी। जब भी बारिश का मौसम आता तो बिल्लियाँ बहुत परेशान करतीं। बिल्लियों के बार-बार चढ़ने से पन्नी पूरी फट जाती। फिर दुबारा नई पन्नी खरीदनी पड़ती।

जब मई का आखिरी हफ्ता होता तो एक-दो दिन पहले ही हम पूरे घर को अच्छे-से तैयार करते। घर बनाने में तीन दिन तो लगते ही थे। जो घर बनाता उसको पैसे भी देने पड़ते थे।

मेरी माँ बाँसों को रस्सी से बाँधतीं। मैं पूरे घर का कचरा फेंकने जाती। हम पुते हुए बैनर को छत में लगाते। तब घर पूरा तैयार होता था। मैं और माँ बोरा या बालटी लेकर मलबा लेने जाते थे। और जब घर गीला होता था तो घर में मलबे को अच्छे-से जमा देते थे ताकि घर सूखा-सूखा लगे।

पर बारिश के आते ही हाल बेहाल हो जाता। रात को सोते तब भी पानी अलग-अलग कोनों से गिरता रहता। हर जगह पर गिलास, कटोरी, गुण्डी (गगरी) लगानी पड़तीं ताकि सोने की जगह थोड़ी सूखी रहे। पर फिर भी पूरा घर गीला हो जाता था। मैं और माँ गोदड़ियों और खाना रखे बरतनों को ही सँभालते रहते। रात को सोने के लिए भी जगह नहीं बचती थी। मेरी माँ बस सामानों और मुझे लेकर बैठी रहतीं। बहुत थोड़ी-सी जगह सूखी होती तो माँ वहाँ मेरे लिए बिस्तर बिछा

## बारिश का मौसम

प्रीति

देतीं। कहतीं, “तू सो जा। मैं बाद में सो जाऊँगी।” पर माँ रात भर नहीं सोतीं। जहाँ से भी पानी अन्दर आता माँ वहाँ पर लकड़ियाँ और थालियों को छत से टिकातीं ताकि पानी अन्दर न गिरे। पर पानी और ज़्यादा ही गिर जाता। सारा समय मैं माँ को बताती रहती कि देखो वहाँ से पानी गिर रहा है। फिर माँ वहाँ पर बरतनों को टिकातीं।

जैसे ही पानी गिरता वैसे ही लाइट भी चली जाती। पूरी बस्ती में घुप्प अँधेरा छा जाता। बस्ती के कुछ लोग लाइट को ठीक करते, तो कुछ मोमबत्ती जलाते। माँ एक ही मोमबत्ती जलाकर चारों तरफ देखतीं कि कोने से पानी तो नहीं आ रहा है। मैं बार-बार कहती कि दीवार टूट गई है। और सभी दीवारों में ज़्यादा ही सीलन आ गई है। माँ दीवारों को ठीक करतीं ताकि पानी अन्दर न घुस पाए। पर पानी छत से टपकने लगता। मैं भी छत को ठीक करने की कोशिश करती पर दूसरी

जगह से और ज़्यादा पानी गिर जाता। ऐसा लगता था कि घर में छोटे-छोटे तालाब बन गए हों। जब तक एक तालाब का पानी फेंकते तब तक दूसरा भर जाता था। और पानी हर जगह से फट जाती। फटे हिस्से को छिपाने के लिए माँ मोटी लकड़ियों को टिकातीं ताकि वहाँ से पानी न निकल पाए।

चारों तरफ यही हाल होता। घर में ऐसा एक भी बरतन नहीं बचता जो छत से टिका न हो। ऐसा लगता कि माँ और मैं किसी टूटे-फूटे घर में आ गए हों। सुबह होने पर हम सब ठीक करने की कोशिश करते। पूरा घर ठीक करने के बाद रात को हम सुकून की नींद सोते। माँ भी पूरा टाइम घर का काम करके बहुत थक जातीं। पूरे दिन की थकान के बाद वो भी अच्छी नींद सो पातीं।

३६

बारिश के आते ही हाल बेहाल हो जाता। रात को सोते तब भी पानी अलग-अलग कोनों से गिरता रहता। हर जगह पर गिलास, कटोरी, गुंडी (गगरी) लगानी पड़तीं ताकि सोने की जगह थोड़ी सूखी रहे। पर फिर भी पूरा घर गीला हो जाता था।





गौरांशी चमोली की दो कविताएँ

## चीड़ के पेड़

चित्र: कनक शशि

चीड़ के पेड़ों से  
नारियल के पेड़ों तक  
बुरांश की खुशबू से  
अमलतास की खूबसूरती तक  
पूरी दुनिया बदलती नज़र आती है  
कौन-से बादल ज़्यादा खुशहाली से भरे होते हैं  
पहाड़ों की चोटियों पर जी भरके बरसने वाले  
एरोप्लेन की खिड़की से भीतर झाँकने वाले  
धूप में चमकते, हर पल रंग बदलते  
पता लगाना मुश्किल है  
घोंसला अपना लगता है  
दूसरे पेड़ आकर्षित करते हैं  
एक नन्ही आलसी चिड़िया  
तैयार हो रही है  
उड़ान के लिए।

## मेरा दोस्त

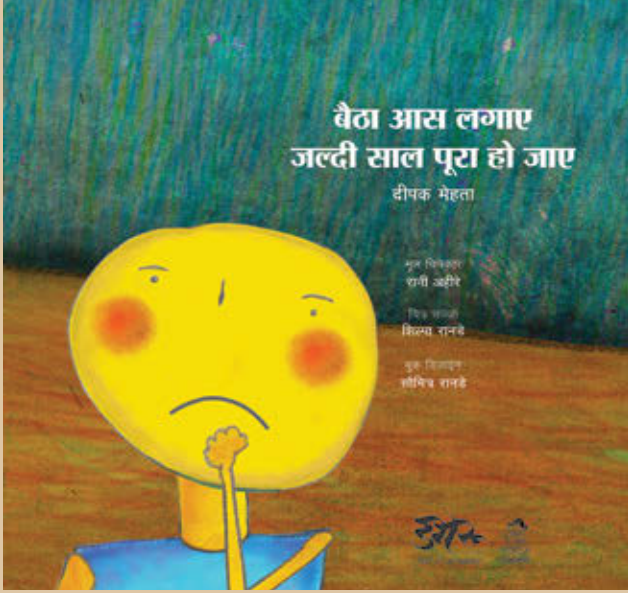
वो जो बड़ा-सा चीड़  
अपनी पत्तियों की उलझन में  
सूरज की असीम ऊर्जा  
छिपाए बैठा है  
मेरा दोस्त है

ॐ

## किताबें कुछ कहती हैं...

किताबों की दुनिया में जाने का एक रास्ता है किताबों की समीक्षाएँ। कुछ बच्चों ने अपनी पसन्द की किताबों की समीक्षाएँ हमें भेजीं। इनमें से कुछ समीक्षाएँ हम यहाँ दे रहे हैं।

तुमने भी, अगर कोई किताब या कोई कहानी-कविता वगैरह पढ़ी हो और उसके बारे में तुम कुछ कहना चाहो तो, हमें लिख भेजना। क्या अच्छा लगा और क्या अच्छा नहीं लगा... हम तुमसे सुनना चाहेंगे।



### बैठा आस लगाए जल्दी साल पूरा हो जाए

लेखक : दीपक मेहता

चित्रकार : रानी अहीरे/शिल्पा राणडे/सौमित्र राणडे

प्रकाशक : एकलव्य

समीक्षा : तथ्य, चौथी, द सृजन स्कूल, दिल्ली

इस कहानी में एक लड़का होता है। उसको बहुत मन करता था एक साइकिल खरीदने का। लेकिन उसके मम्मी-पापा दो साल तक उसे टालते रहे। जैसे कि अभी तू छोटा है, पहले साइकिल चलाना तो सीख ले। लेकिन दो साल के बाद उसके पापा को साइकिल लानी ही पड़ती है। साइकिल आने के बाद भी उसके सामने काफी सारे सवाल खड़े हो जाते हैं। और उन सवालों को जानने के लिए आपको यह किताब पढ़नी पड़ेगी।

मुझे यह किताब बहुत अच्छी लगी क्योंकि मैं भी इसको अपनी एक बात से जोड़ पा रहा हूँ। कुछ महीने पहले मैंने अपनी मम्मी को कहा था कि मम्मा हम भी एक बारबिक्यू स्टोव ले लें। तो मम्मा ने कहा, “अभी तुम्हारा बर्थडे आने दो, फिर खरीदेंगे।” मेरा बर्थडे दिसम्बर में आता है और मैं दिसम्बर का इन्तज़ार कर रहा हूँ कि कब मेरा बर्थडे आएगा और मुझे बारबिक्यू मिलेगा।

मुझे लगता है कि जब भी हम कोई किताब पढ़ते हैं तो हम उसको किसी भी लाइफ की बात से जोड़ पाते हैं। तो आप भी यह किताब ज़रूर पढ़िए और मुझे लगता है कि आपको यह ज़रूर पसन्द आएगी।

३६







## आई लव यू स्पॉट

लेख व चित्र : एरिक हिल  
प्रकाशक : वार्न  
समीक्षा : इरा माथुर, सात वर्ष मुम्बई, महाराष्ट्र

आई लव यू स्पॉट मैंने लॉकडाउन के पहले खरीदी थी। मुझे यह किताब बहुत पसन्द आई। एक तो मैं इसे खुद से पढ़ पाती हूँ और दूसरा, इस किताब का कवर मुझे बहुत पसन्द है। दिल के आकार का! इसमें एक बेबी डॉग अपनी मम्मी के लिए एक कार्ड बनाता है। मैं भी अपनी मम्मी को बहुत प्यार करती हूँ। इसलिए यह कहानी मुझे बहुत अच्छी लगी। और हाँ, इसमें एक प्यारी बिल्ली भी है।

झक



# चकमक

के खज़ाने में  
से निकली  
तीन किताबें।

पिछले 34 सालों में  
मेरा फना व माथापच्ची  
में छपी सामग्री से हमने  
तीन किताबें बनाई हैं।

माथा  
पच्ची

बच्चों की  
रचनाओं से  
सजा ये  
आकर्षक सेट  
मात्र ₹ 350 में।  
डाक खर्च हम देंगे।

ऑफर सितम्बर महीने के अंत तक

इन्हें मँगाने के लिए तुम चकमक के पते पर लिख सकते हो।

या हमें फोन कर सकते हो 97530 11077

ईमेल कर सकते हो [chakmak@eklavya.in](mailto:chakmak@eklavya.in) : [circulation@eklavya.in](mailto:circulation@eklavya.in)

चकमक 25  
सितम्बर 2020

## फेडरर के साथ मैच



अप्रैल महीने में इंटरनेट पर एक वीडियो वायरल हुआ। इसमें 13 साल की वित्तोरिया ओलीविएरी और 11 साल की कार्रोला पेस्सिना टेनिस खेल रही थीं। इस वीडियो की खास बात यह थी कि लॉकडाउन के कारण ये दोनों मैदान की बजाय अपनी-अपनी बिल्डिंग की छत से टेनिस खेल रही थीं। इस वीडियो को देखने वालों में मशहूर टेनिस खिलाड़ी रॉजर फेडरर भी थे।

हाल ही में वित्तोरिया और कार्रोला को बताया गया कि उनका इंटरव्यू है। असल में फेडरर ने उनसे मिलने का प्लान बनाया था। दोनों दोस्तों के नकली इंटरव्यू के बीच वहाँ आकर फेडरर ने उन्हें सरप्राइज़ दिया। इसके बाद दोनों को फेडरर के साथ मैच खेलने का मौका भी मिला। फेडरर के लिए यह काफी नया अनुभव था क्योंकि दोनों तरफ के खिलाड़ी कोर्ट में नेट के आर-पार होने की बजाय आमने-सामने की बिल्डिंग की छत पर खड़े थे। फेडरर के कारण दोनों दोस्तों को विश्व प्रख्यात नडाल टेनिस अकादमी से जुड़ने का मौका भी मिला है।

मैक

तमिलनाडु के पोत्तकुडी गाँव में एक दिलचस्प घटना घटी। वहाँ के रहवासी करुप्प राजा बचपन से रोज़ शाम 6 बजे अपनी गली के 35 लैम्प जलाते और सुबह 5 बजे बन्द कर देते। एक दिन उन्होंने गौर किया कि मेन स्विचबोर्ड के पास कोई चिड़िया लकड़ियों का घोंसला बना रही थी। हर रोज़ वो करुप्प राजा को देखकर उड़ जाती। तीन दिनों तक यह सिलसिला चलता रहा। लेकिन चौथे दिन उन्होंने वहाँ कत्थई धब्बों वाले तीन हरे-नीले रंग के अण्डे देखे। अब उनको लगा कि चिड़िया और उसके बच्चों को चैन से रहने देना चाहिए। लेकिन इसका मतलब था कि 100 घरों वाली एक गली में कुछ महीनों के लिए रोशनी नहीं होती। करुप्प राजा ने अपने महल्ले के व्हाट्सएप ग्रुप में यह प्रस्ताव रखा और अगले दिन सरपंच से भी मिलने गया। सब मान गए। और इस तरह 40 से भी अधिक दिनों के लिए इस गली में कोई लैम्प नहीं जला। दिन में बारी-बारी से लोग चिड़िया (इण्डियन रोबिन) और उसके बच्चों को दूर से देखकर खुश होकर चले जाते। और इस तरह एक बड़े गाँव ने एक छोटी चिड़िया और उसके बच्चों को बचाया।

मैक

एक छोटी चिड़िया और उसके बच्चों को बचाया इस मोहल्ले ने



# बोरवाला

मूल तेलुगू कहानी: जयश्री कलाथिल  
चित्रांकन: राखी पेशवानी  
अनुवाद: शशि सबलोक  
प्रकाशक: एकलव्य

यह कहानी अन्वेषी द्वारा विकसित की गई डिफरेंट टेलस का हिस्सा है। डिफरेंट टेलस क्षेत्रीय भाषा की कहानियाँ ढूँढ़-ढूँढ़कर निकालता है, ऐसी कहानियाँ जो जिन्दगी की बातें करती हैं — ऐसे समुदायों के बच्चों की कहानियाँ जिनके बारे में बच्चों की किताबों में बहुत कम पढ़ने को मिलता है।

अब तक तुमने पढ़ा:

अनु की गर्मी की छुट्टियाँ शुरू हो गई हैं। चार महीने पहले ही उसकी सजिचेची की मौत हो जाती है। तब से अम्मा उदास रहने लगती हैं और अच्चन भी घर में कम ही दिखाई देते हैं। पहले तो अनु फटी-पुरानी बोरियों के थैगड़ों को सिलकर पहनने वाले चाकप्रान्दन से डरती है। पर धीरे-धीरे उसे चाकप्रान्दन से बातें करना अच्छा लगने लगता है। बातों-बातों में चाकप्रान्दन एक दिन एक एक्सीडेंट का जिक्र करता है। पर इसके आगे वो कुछ बोल नहीं पाता। फिर एक दिन वो नहीं आता। उसके बाद भी कई दिनों तक नहीं आता। अनु उसे ढूँढ़ने की कोशिश करती है।

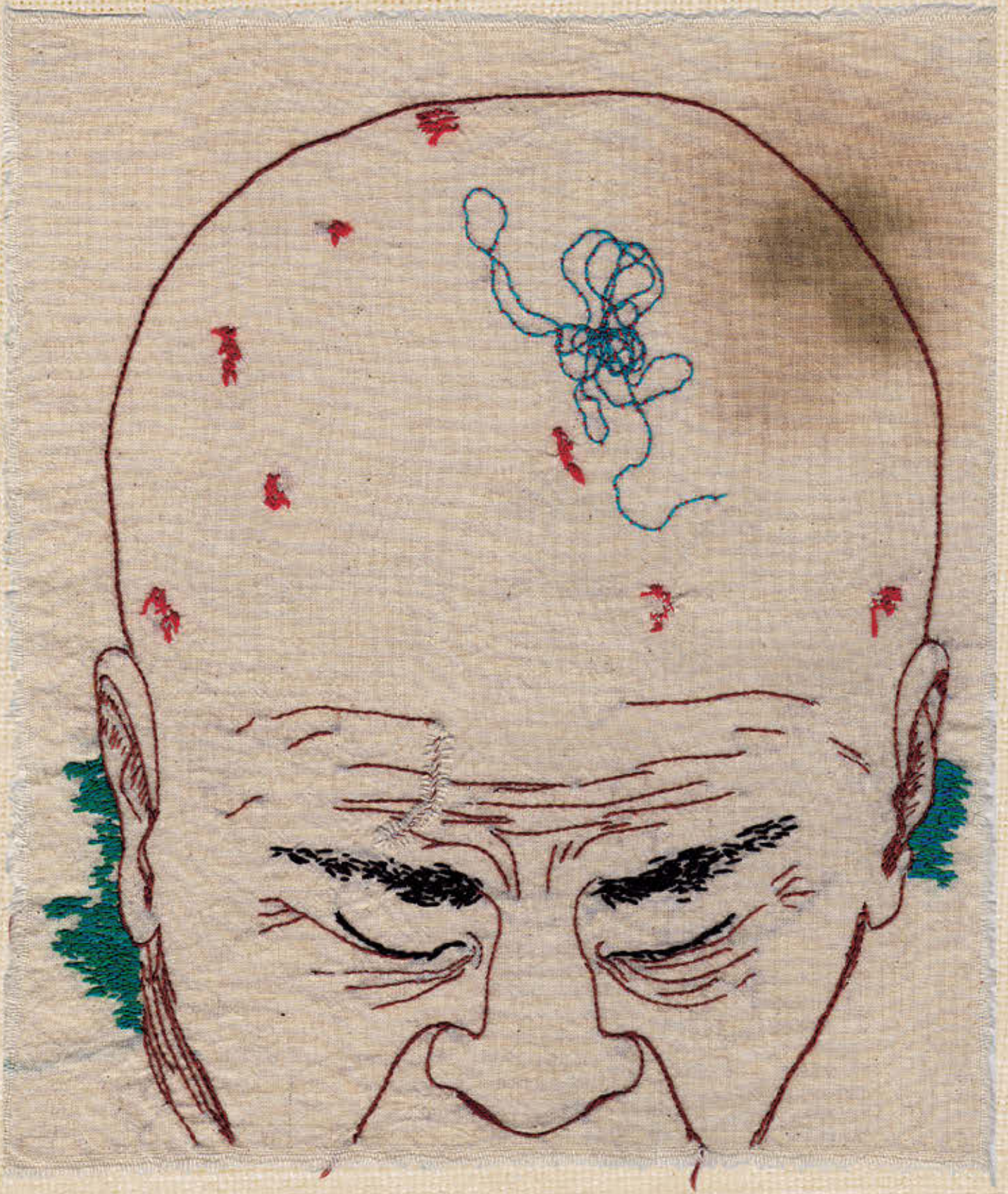
अब आगे...

अगली सुबह मैं उठी और रसोई में गई। वहाँ वल्यअम्मा थीं। उन्होंने मुझे नहाने भेज दिया और वो अम्मा के कमरे में चली गई। मैंने सुना कि वो उठने के लिए अम्मा की मनुहार कर रही थीं। नहाकर जब मैं बाहर गई तो देखा रघु मामन और अच्चन बैठे कॉफी पी रहे थे।

रघु मामन अच्चन के कज़िन थे। वो भारत कला और खेल क्लब — बीएसए क्लब — के अध्यक्ष थे। इस क्लब के सभी सदस्य रघु मामन जैसे थे — सभी कॉलेज

जाते थे और उनका दफ्तर पोस्ट ऑफिस के ऊपर वाले कमरे में था। हर साल गर्मियों की छुट्टियों में वे कई गतिविधियाँ करते हैं — जैसे कि आसपास के दूसरे क्लबों के साथ क्रिकेट या फुटबॉल के मैच आयोजित करना। पिछले साल तो उन्होंने एम जी श्रीकुमार और सुजाता के साथ एक फिल्म संगीत का कार्यक्रम भी किया था। कभी-कभी वे सार्वजनिक तालाब की सफाई या बस अड्डे के आसपास की दुकानों की रंगाई-पुताई जैसे काम भी करते हैं।





रघु मामन इस साल की गतिविधियों के बारे में अच्चन से चर्चा कर रहे थे। मैं वहीं बैठी उन्हें सुनने लगी।

“इस साल कम पैसा इकट्ठा हुआ है। आजकल कोई पैसा देना ही नहीं चाहता। मुझे नहीं लगता इस बार कोई खेल या सांस्कृतिक कार्यक्रम हो पाएगा।” रघु मामन कह रहे थे।

“तो क्या करने की सोच रहे हो?” अच्चन ने पूछा।

“इस बार कुछ धर्मार्थ करने का सोच रहे हैं। सोचा है कि चाकप्रान्दन को इलाज के लिए कुतिरवट्टम ले जाएँ।”

“कितनी शर्म की बात है कि एक बीमार व्यक्ति इधर-उधर घूमता रहे और हम हाथ पे हाथ धरे देखते रहें। उसे इलाज की ज़रूरत है।” रघु मामन काँफी का घूँट भरते हुए बोले।

“पर क्या वो तुम्हारे साथ चलेगा?” अच्चन ने पूछा।

“देखो मान-मनौव्वल तो करनी ही पड़ेगी। यह उसी के लिए अच्छा है। हमने कुतिरवट्टम अस्पताल में एक मनोवैज्ञानिक से बात कर ली है। गली-महल्लों में घूमने वाले पागलों के लिए उनका एक प्रोजेक्ट है।”

अच्चन ने मेरी ओर देखा। “अनु तुम अन्दर जाकर पता तो लगाओ कि नाश्ता तैयार है कि नहीं।” मैं जानती थी कि वो नहीं चाहते कि मैं चाकप्रान्दन के बारे में उनकी बातचीत सुनूँ। सो बहाने से मुझे भगा दिया।

मैं उठी और अन्दर चली गई। कुछ समझ नहीं आ रहा था। हो सकता है रघु मामन ही सही हों कि चाकप्रान्दन को इलाज की ज़रूरत है। पर प्रभाकरन डॉक्टर की दवा से तो अम्मा और ज़्यादा उदास और उनींदी हो जाती हैं। वो तो मुझे ठीक होती नहीं नज़र आती। काश कि कोई मुझे इन चीज़ों के बारे में समझाता, मुझसे बात करता। काश कि सजिचेची यहाँ होती, मुझे समझाती।

पूरी सुबह मैं मुँह लटकाए इधर से उधर होती रही। अन्त में वल्यअम्मा का सारा धीरज जाता रहा और

उन्होंने मुझे खेलने के लिए रशीदा के घर भेज दिया।

वो शनिवार का दिन था। काम पर जाने से पहले अच्चन ने मुझसे कड़ाई से कहा कि आज मैं बिलकुल भी घर से बाहर न निकलूँ। क्योंकि आज बीएएस के लोग चाकप्रान्दन को तालाब के पास ले जाने वाले हैं ताकि उसे कुतिरवट्टम के लिए तैयार किया जा सके। रशीदा दस बजे आई और हम तम्बक्का के पेड़ के नीचे साँप-सीढ़ी खेलने लगे। मेरी गोटी में ऐसे ही नम्बर आते रहे जो मुझे सीधे साँप के मुँह में पहुँचाते रहे।

उसी समय मैंने रघु मामन और उनके दोस्तों को देखा। उनके साथ उनकी क्रिकेट टीम का विकेट कीपर हमीदक्का, वीडियो की दुकान वाला दिलीपन और कुछ और लोग भी थे जिन्हें हम नहीं पहचानते थे। हम दौड़ते हुए गेट पर गए, फिर सड़क पार कर पोस्ट ऑफिस पहुँच गए।

वहाँ एक कोने में चाकप्रान्दन बैठा था। भीड़ को देखते ही वो उठा और उसने अपने बोरे को कसकर पकड़ लिया। रघु मामन सीढ़ी चढ़ बरामदे पर पहुँचे और चाकप्रान्दन से बोले, “चलो हमारे साथ। हम सब तालाब में साथ-साथ नहाएँगे।”

चाकप्रान्दन ने भागने की कोशिश की। पर लोगों ने उसे पकड़ लिया। रघु मामन ने तौलिए से उसके दोनों हाथ उसकी पीठ के पीछे किए। कभी खींचते, कभी धकेलते, तो कभी उसके साथ चलते हुए वे उसे तालाब तक ले आए। मुझे बड़ी-बड़ी सुबकियाँ सुनाई दे रही थीं – चाकप्रान्दन बिना कुछ कहे रोता जा रहा था।

रशीदा और मैं उनके पीछे दौड़े। सड़क पर सभी लोग उसी तरफ भागे जा रहे थे। जल्द ही वहाँ भीड़ लग गई थी। वे उसे तालाब की पूर्वी दिशा में नीचे ले गए। और उसे एक सीढ़ी पर बैठा दिया। कुछ लोगों ने उसे जकड़ लिया था और रघु मामन और हमीदक्का उसके बाल काटने लगे। बालों के गुच्छे उसके चारों ओर गिर रहे थे। उसे गंजा कर दिया गया था।

तभी हमें किसी की तेज़ आवाज़ सुनाई दी, “तुम दोनों यहाँ क्या कर रही हो?” हमने मुड़कर देखा। वहाँ रशीदा के दादाजी खड़े थे। वे गुस्से में बोले, “तुम लोगों का यहाँ क्या काम? घर जाओ। अभी...”

“पर उप्पा...” रशीदा ने बोलना शुरू ही किया था कि वो गुर्राए, “मुँह बन्द। एकदम बन्द। और घर जाओ। अभी के अभी। नहीं तो मैं खुद तुम्हें खींचकर ले जाऊँगा।”

उनके सामने बोलने का कोई फायदा नहीं था। रशीदा के दादा हमारे साथ घर तक आए। वे तब तक खड़े रहे जब तक हम अन्दर नहीं चले गए। हमने टीवी चला लिया। सूर्या चैनल में जयराम की एक फिल्म चल रही थी। हम उसे देखते रहे। पर हमारा ध्यान वहाँ नहीं लग रहा था। हम चाकप्रान्दन के बारे में बात करते रहे। वो ठीक होगा कि नहीं।

शाम को जब मैं अपने घर के लिए निकली, सड़क खाली हो चुकी थी। सब कुछ शान्त लग रहा था। लगभग चार बज रहे थे। अम्मिनिअम्मा तीन बजे पोस्ट ऑफिस बन्द कर घर चली गई होंगी। मैंने सोचा देखूँ चाकप्रान्दन कहीं वहीं तो नहीं बैठा।

मुझे देखते ही वो अपने कोने में दुबक गया। वो मेरी ओर देखने से झिझक रहा था। वो बहुत अलग लग रहा था। उसने भूरी धारियों वाला पजामा और हरी शर्ट पहनी थी। आसपास कहीं भी उसकी बोरियों के

टुकड़े नहीं थे। उसके सामने प्लेट में चावल और सब्जी रखी थी। पर उसने उसे छुआ तक नहीं था।

पर उसका चेहरा और उसका सिर...। उसके सिर पर अब बाल नहीं थे, ना ही टुड़डी पर। ऐसा लग रहा था जैसे रेज़र से उसकी चमड़ी जगह-जगह से छिल गई थी। वहाँ खून लगा था। उसके बाएँ हाथ की कोहनी पर छिलने के निशान थे, जैसे उसने अपने हाथ को किसी खुरदरे पत्थर पर रगड़ा हो।

मैं बरामदे पर चढ़कर उसके पास बैठ गई। “तुम ठीक हो ना? दर्द हो रहा है?” मैंने पूछा।

वो सिर झुकाए रहा। पर जब मैंने उसकी कोहनी को छूने के लिए हाथ बढ़ाया तो वो अपने कोने में थोड़ा और खिसक गया। “सुनो, तुम अस्पताल चले जाओ। मैंने सुना है वो बहुत बड़ा अस्पताल है।”

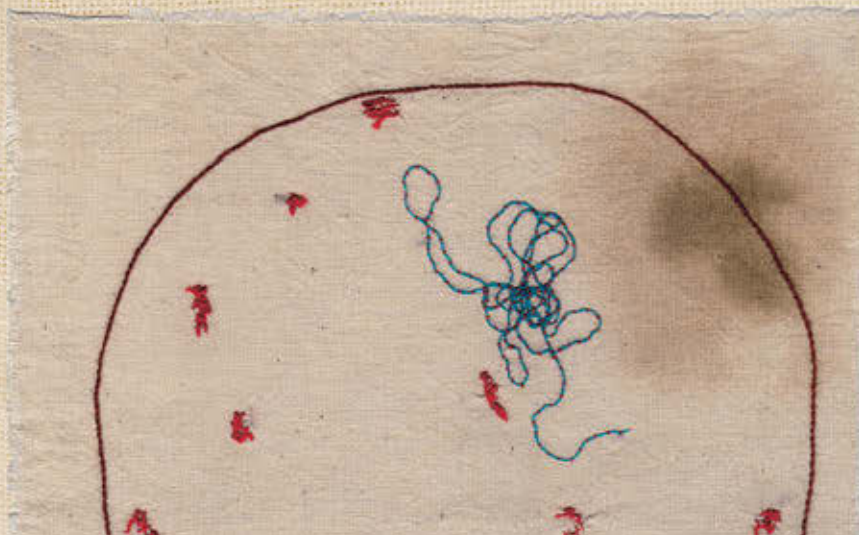
उसने कोई जवाब नहीं दिया। जैसे उसने मुझे सुना भी नहीं हो। समझ नहीं आ रहा था कि उससे क्या कहूँ। “हो सकता है तुम ठीक हो जाओ। फिर तुम सोमन के पास जा सकते हो।”

उसके बाद मैं वहीं बैठी रही। चाकप्रान्दन ने मुझे देखा तक नहीं। अब मुझे फिक्र होने लगी थी। इसलिए भी कि अब लोग काम से वापस घरों की ओर लौटने लगे थे। और कोई अच्छन से कह सकता था कि उसने मुझे चाकप्रान्दन के पास बैठे देखा था।

मैं उसे वहीं छोड़कर घर चली आई। उस शाम वो घर नहीं आया। मैंने इसकी उम्मीद भी नहीं की थी। उस रात मैं अकेले नहीं सोना चाहती थी। तो मैं अम्मा के बिस्तर पर उनके साथ लेट गई। उन्हें उसके साथ ज़बरदस्ती करने की क्या ज़रूरत थी? वो किसी को नुकसान तो नहीं पहुँचा रहा था। वो बस वहाँ चुपचाप बैठा रहता था या इधर-उधर घूमता रहता था। जो मिलता वह खा लेता था। काश कि कोई मुझे बता देता। मुझसे बात करने वाला वहाँ कोई नहीं था।

जारी...

३३





## चमगादड़ करोड़ों वर्ष से वायरसों को गच्चा दे रहे हैं

अभी तक सार्स-कोव-2 वायरस (कोविड-19 बीमारी के लिए ज़िम्मेदार कोरोना वायरस) लगभग डेढ़ करोड़ लोगों को बीमार कर चुका है लेकिन चमगादड़ों का ऐसे वायरसों के साथ जीने का काफी पुराना इतिहास रहा है। चमगादड़ परिवार की छह प्रजातियों के हालिया अनुक्रमित जीनोम से पता चला है कि वे पिछले साढ़े छह करोड़ वर्षों से वायरस को बड़ी चालाकी से गच्चा दे रहे हैं।

गौरतलब है कि विश्व में चमगादड़ों की एक हजार चार सौ से अधिक प्रजातियाँ हैं। ये दो ग्राम से लेकर एक किलोग्राम से भी अधिक वज़न के होते हैं। कुछ तो 41 वर्ष की उम्र तक जीते हैं जो इनके आकार के हिसाब से काफी अधिक है। इनमें कोरोना वायरस सहित सभी प्रकार के वायरस बिना किसी कुप्रभाव के पाए जाते हैं। चमगादड़ों के इस रहस्य की खोज करने के लिए वर्ष 2017 में एक अन्तर्राष्ट्रीय टीम ने 'बैट 1000' परियोजना की शुरुआत की। इस परियोजना के तहत चमगादड़ों की समस्त प्रजातियों के जीनोम का अनुक्रमण करने का लक्ष्य है। एक रिपोर्ट के अनुसार अब तक छह जीनोम का अध्ययन पूरा हो गया है।

शोधकर्ताओं द्वारा इन जीनोम की तुलना 42 विभिन्न स्तनधारियों के जीनोम से की गई। इनमें

मनुष्य का जीनोम भी शामिल था। उन्होंने पाया कि अनुमान के विपरीत चमगादड़ों के सबसे करीबी रिश्तेदार छछून्दर, लीमर या चूहे नहीं बल्कि इनके पूर्वज उन स्तनधारियों के भी पूर्वज हैं जो अन्ततः घोड़े, पैंगोलिन, व्हेल और कुत्तों में विकसित हुए।

आगे विश्लेषण से पता चला है कि चमगादड़ कम से कम अपने कुछ 10 जीन्स को निष्क्रिय कर चुके हैं। ये वही जीन्स हैं जो अन्य स्तनधारियों में संक्रमण के खिलाफ शोध (इन्प्लेमेसन) प्रतिक्रिया उत्पन्न करते हैं। इसके अलावा उनमें वायरस-रोधी जीन्स की अतिरिक्त प्रतियाँ और बदले हुए रूप भी पाए गए। ये दोनों गुण रोगों के प्रति उनकी उच्च सहनशीलता की व्याख्या करते हैं।

इसके साथ ही चमगादड़ों के जीनोम में पूर्व-वायरल संक्रमण से प्राप्त डीएनए के टुकड़े पाए गए जो वायरस की प्रतिलिपियाँ बनते समय चमगादड़ के जीनोम में जुड़ गए होंगे। वायरल डीएनए के इन टुकड़ों के अध्ययन के आधार पर टीम का कहना है कि अन्य स्तनधारियों की तुलना में चमगादड़ों में अधिक वायरल संक्रमण हुए हैं। इससे चमगादड़ों में वायरल संक्रमण को सहन करने और अधिक कुशलता से जीवित रहने की क्षमता उजागर होती है।

साभार: स्रोत फीचर्स)





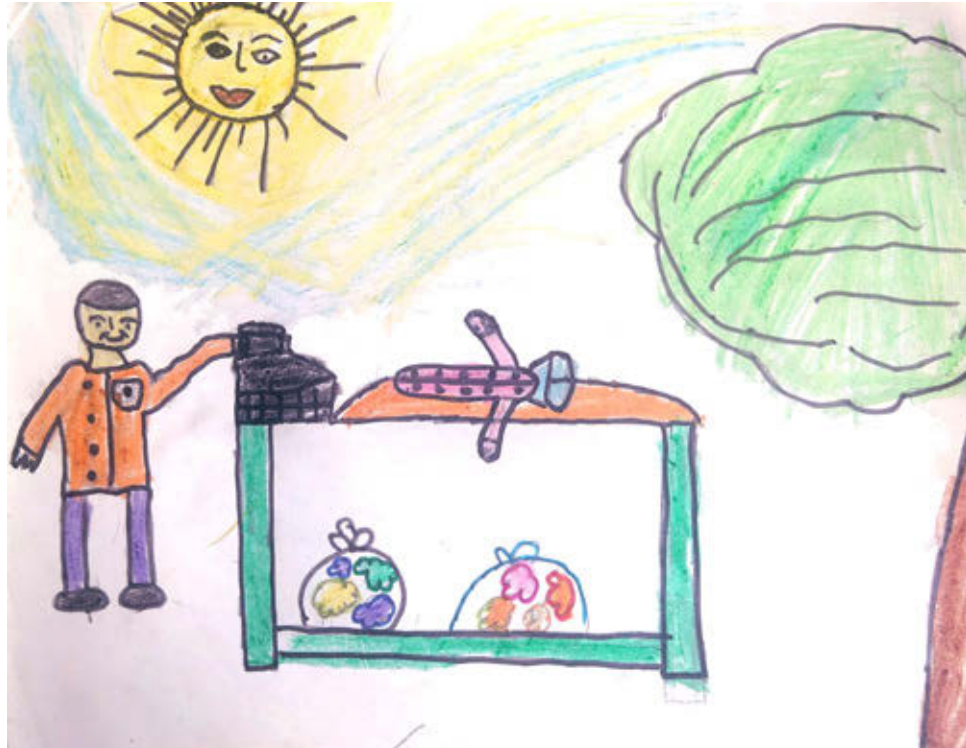
## मेरे पापा

नितिन कनौजिया  
पाँचवीं, राजकीय प्राथमिक विद्यालय प्रथम, धुसाह  
बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मेरे पापा कपड़े धोते हैं। घर से दूर एक नरकटिया ताल है। वहीं कपड़ा धोकर, सुखाकर घर ले आते हैं। फिर उसको दुकान पर ले जाते हैं और प्रेस करते हैं।

पापा सबसे जल्दी उठकर कपड़े प्रेस करते हैं। फिर सबके खीया कपड़े देने जाते हैं। सबसे पहले ठाकुर खीया जाते हैं। बीस कपड़ों का सौ रुपया मिलता है। एक नाऊ खीया जाते हैं। पचास कपड़ों का दो सौ पचास रुपया मिलता है।

मेरे पापा और माँ जितना कपड़ा रहता है सब साइकिल पर रखकर ताल पर ले जाते हैं। ताल पर एक लकड़ी लगाते हैं। फिर उसके ऊपर एक पाटा रखते हैं। सब कपड़े उस पर रख देते हैं। फिर दोनों कपड़ों को ताल के पानी में भिगोते हैं। उस पर जय हिन्द साबुन लगाते हैं। पाटे पर कपड़ा पीटते हैं। तब वह साफ हो जाता है। तब पापा सब कपड़ा मेरी माँ को देते हैं। माँ उसको एक झाड़ पर फैलाती हैं। फिर वो सूख जाता है। तीन बजे तक कपड़े की माँ और पापा





# मेरा पन्ना

रक्षा करते हैं। मेरी बहन खाना बनाकर लाती है। पापा-माँ खाना खाने लगते हैं तो मेरी बहन कपड़ा रखाती है। शाम को जब धूप कम होने लगती है तब सारा कपड़ा बटोरकर वो वापिस घर ले आते हैं। पापा के पास लोहे का प्रेस है। पापा पहले प्रेस में कोयला डालते हैं। फिर उसमें लकड़ी के टुकड़े डालते हैं। फिर बेना\* हाँकते हैं। तब वो सुलग जाता है और लोहा गर्म हो जाता है। फिर उसको उठाकर कपड़ा प्रेस करते हैं। पापा थक भी जाते हैं। जो कपड़ा बच जाता है। उसे मेरी माँ प्रेस करती हैं।

मेरे पापा एक बार में तीन गठरी ले जाते हैं। हर गठरी में अलग-अलग घर का कपड़ा गिनकर बाँधा जाता है। ठाकुर ताऊ और पण्डित बाबा के यहाँ रोज़ ही जाते हैं। लेकिन बृहस्पतिवार को वे लोग कपड़े ना तो देते हैं, ना ही लेते हैं। एक इंजीनियर साहब के यहाँ भी जाते हैं। जब वे टाई प्रेस करने को देते हैं तो बड़ा ध्यान रखना पड़ता है। पापा टाई पर मोटा कपड़ा रखकर ही प्रेस करते हैं। क्योंकि अगर सीधी टाई पर प्रेस रख दो तो वो खराब हो सकती है।

मेक

\* हाथपंखा



## हाथी की सवारी

निशी गजपाल

दूसरी, प्राथमिक शाला कसारीडीह, दुर्ग, छत्तीसगढ़

एक दिन हमारे गाँव में एक हाथी आया। हमारे गाँव में पहली बार हाथी आया था। हाथी को देखकर कुत्ते भौंकने लगे। और सब गाय-भैंस डरकर भाग गए। हाथी वाला हमारे घर आया। फिर माँ ने पैसे देकर मुझे हाथी पर बिठाया। पहले डर लगा। लेकिन हाथी की सवारी करके मुझे बहुत मज़ा आया।

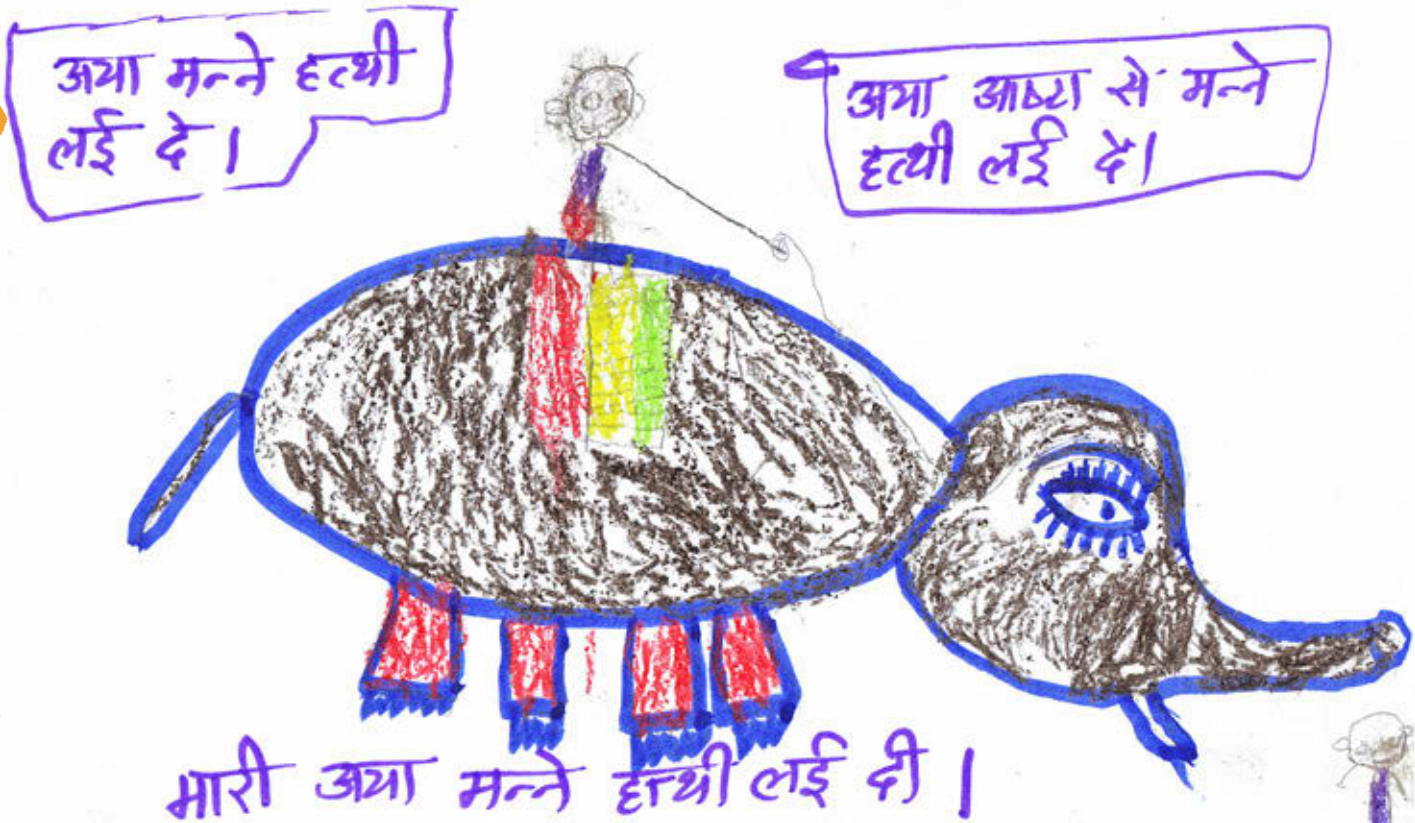
## मछली

पराग शिन्दे

पाँचवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण

सतारा, महाराष्ट्र

मछली ओ मछली  
पानी से उछली  
बगुले को देखकर  
फिर से पानी में चली गई



चित्र: मुस्कान, मुस्कान संस्था, भोपाल, मध्य प्रदेश



चित्र: इरा श्रीवास्तव, पहली, मोटिवेशन -द लर्निंग सेंटर, नोएडा से साभार



चित्र: पलाश सोनी  
तीसरी, शारदा विद्या मंदिर  
भोपाल, मध्य प्रदेश

उस पेड़ पर ही बैठी रही। पेड़ पर चिड़िया को बैठते हुए साँप ने देख लिया। वह उस चिड़िया को खाने के लिए पेड़ पर चढ़ गया। साँप ने पेड़ पर चढ़कर चुपके से चिड़िया की पूँछ पकड़ ली। चिड़िया ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी। उसकी आवाज़ सुनकर तोता उसके पास आया।

चिड़िया ने तोते से कहा, “मुझे साँप ने पकड़ लिया है। जल्दी मुझे बचाने के लिए कोई उपाय करो, नहीं तो यह मुझे खा जाएगा।”

तोता तुरन्त कौए के पास गया और उसे बुलाकर ले आया। कौए ने ज़ोर-से साँप के सिर पर चोंच मारी तो उसने चिड़िया को छोड़ दिया। साँप के सिर से खून निकलने लगा और साँप वहाँ से भाग गया।

## कोई उपाय करो

कोयल

आठ वर्ष, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र, सवाई माधोपुर, राजस्थान

एक बार एक जंगल था। उस जंगल में तोता और कौआ दो दोस्त रहते थे। उस जंगल में एक साँप था जो दूसरे पक्षी और जानवरों को खा जाता था। एक दिन एक चिड़िया उड़ती हुई एक पेड़ पर आकर बैठ गई। उस पेड़ पर बहुत मीठे फल आ रहे थे। फलों को देखकर चिड़िया से रहा नहीं गया। उन्हें खाने के लालच में वह



## मेलमिलाप

शिवम त्रिवेदी

आठवीं 'ब', सेंट फ्रांसिस स्कूल गोमती नगर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

एक बार मैं नए जूते पहनकर अपने एक दोस्त से मिलने जा रहा था। जब मैं चौराहे पर पहुँचा तो वहाँ दो कुत्ते आपस में झगड़ रहे थे। मैं उनसे बचते-बचाते निकलने की कोशिश करने लगा। इतने में वे आपस में लड़ना छोड़ मेरी ओर मुखातिब हो भौंकने लगे। उनकी भौं-भौं से मैं घबरा गया। उनमें से एक कुत्ता मेरी ओर झपटा। मैं भागने लगा। भागते हुए मेरा पैर एक बड़े-से गिजगिजे पिण्ड में जा घुसा। मैं फिर भी भागता रहा। कुछ दूर जाने पर कुत्ता वापिस लौट गया। तब मैंने राहत की साँस ली। लेकिन गोबर में लिपटा मेरा सफेद जूता मुझे बेचारगी से देख रहा था।

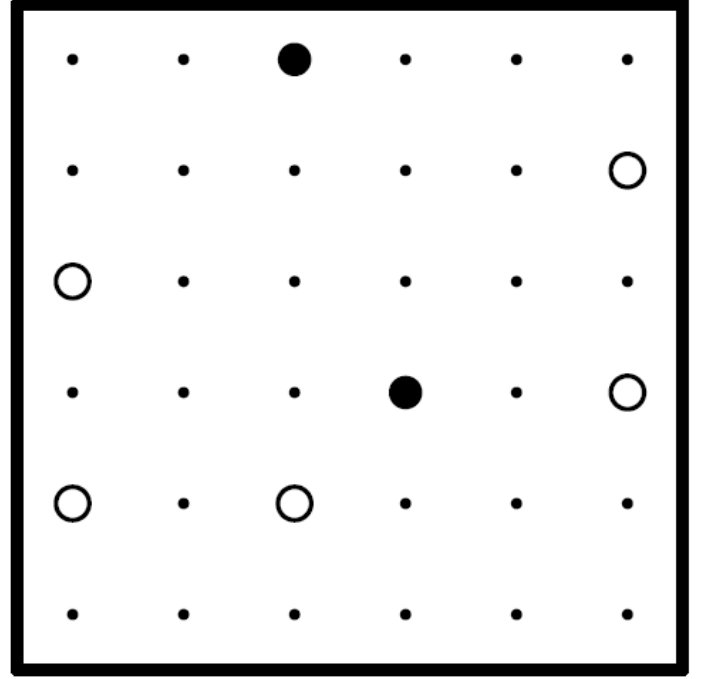


चित्र: वंश, के के एकेडमी, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

# माथापट्टी

1. दी गई ग्रिड में केवल आड़ी व खड़ी लाइनों के ज़रिए एक ऐसा लूप बनाओ जो सभी काले और सफेद गोलों से होकर गुज़रता हो। यह एक निरन्तर लूप होना चाहिए यानी बनने के बाद मालूम ना पड़े कि लूप शुरू कहाँ से हुआ था। लूप बनाते हुए इन बातों का ध्यान रखना:

1. हर काले गोले पर लाइन को मोड़ना ही है और काले गोले के बाद कम से कम दो खानों तक लाइन सीधी रहेगी।
2. हर सफेद गोले से लाइन को सीधे ही जाना है पर सफेद गोले के अगल-बगल के किसी एक खाने से लाइन को मोड़ना है।



2.

यदि

$$1 = 4$$

$$2 = 16$$

$$3 = 64, \text{ तो}$$

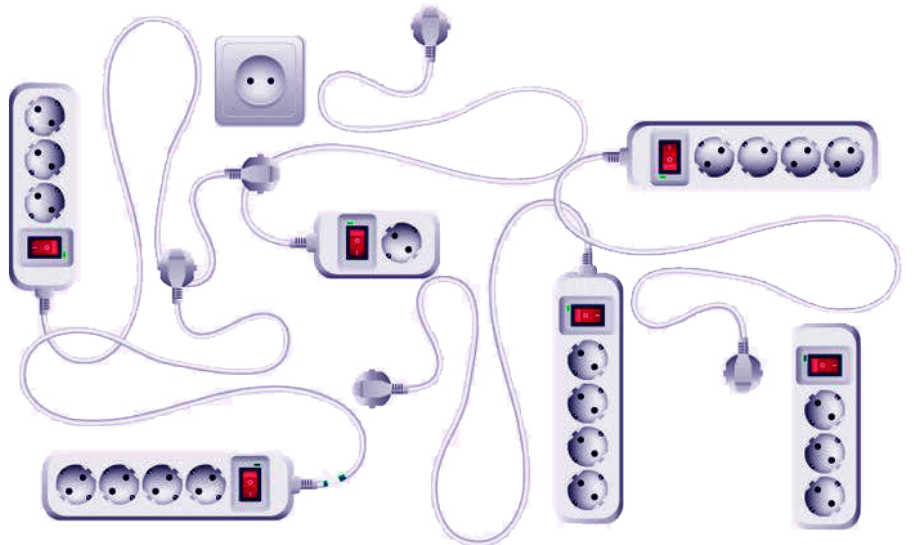
$$4 = ?$$

3.

सारा और अयान के पास चॉकलेट का एक-एक डिब्बा है। हरेक डिब्बे में 12 चॉकलेट हैं। सारा ने अपने डिब्बे में से कुछ चॉकलेट खा लीं। अयान ने अपने डिब्बे में से उतनी ही चॉकलेट निकालकर खाई जितनी कि सारा के डिब्बे में बची थीं। क्या तुम बता सकते हो कि अब दोनों के पास मिलाकर कुल कितनी चॉकलेट थीं?

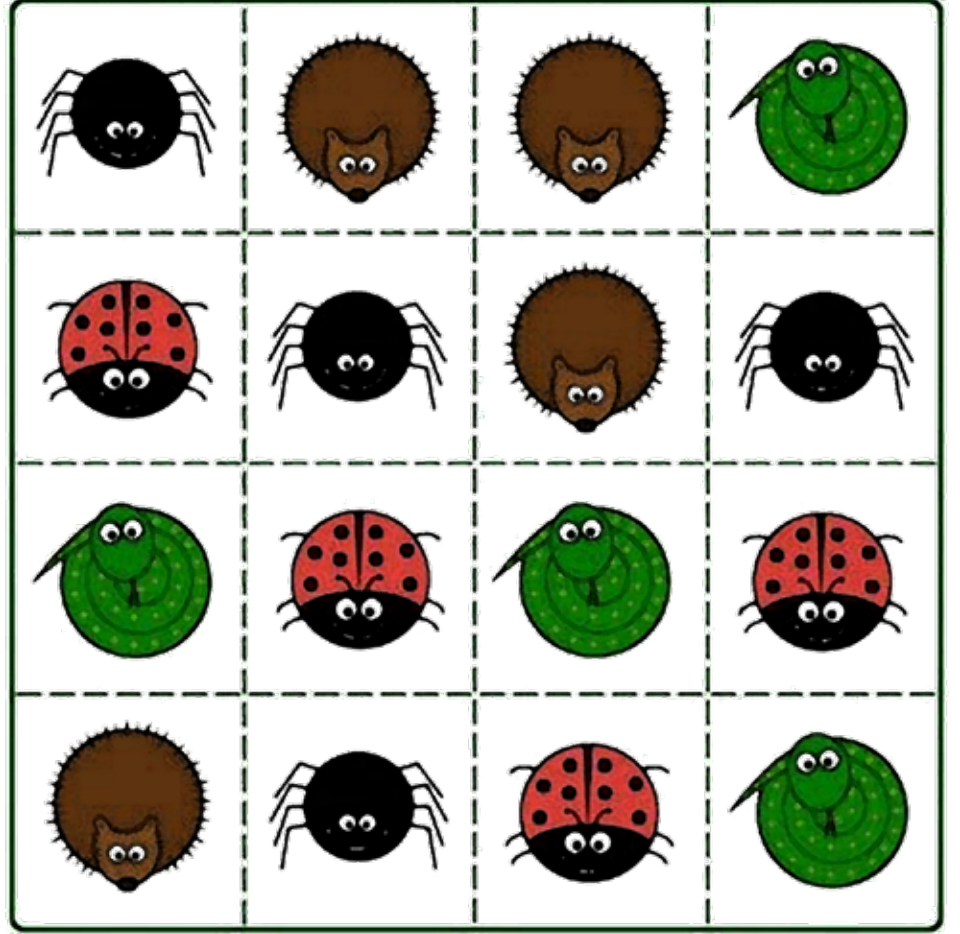
4.

इन प्लगों में एक साथ कितने मोबाइल चार्ज किए जा सकते हैं?



5.

नीचे दिए गए चित्र को चार बराबर हिस्सों में इस तरह बाँटना है कि हर भाग में एक मकड़ी, एक वीरबहूटी, एक साँप और एक साही हो। कैसे करोगे?



6.

सभी खाली जगहों में एक ही शब्द आएगा। कौन-सा?

एक .....  
लड़की ..... पर  
बैठी ..... गाना गा  
रही थी। उस ..... से  
दूर-दूर तक बस  
..... ही दिखाई  
देती थी।

## फटाफूट बताओ

अगर बबीता इरा की मम्मी हैं तो  
बबीता इरा की मम्मी का क्या है?

(माफ)

मैं छेदों से भरा हुआ हूँ फिर भी पानी  
सोखता हूँ। बताओ मैं कौन हूँ?

(चम्प)

वह क्या है जो ऊपर-नीचे जाती है,  
फिर भी एक ही जगह पर रहती है?

(पिंडीफि)

एक पैर का काला मेंढ़क, बारिश में वो आता है  
खूब बरसता है जब पानी, उपयोगी बन जाता है

(ताछ)

दो अक्षर का मेरा नाम  
सर को ढँकना मेरा काम

(फिड)

चार पाँव पर चल न पाए,  
चलते को भी वह बैठाए

(फिकु)

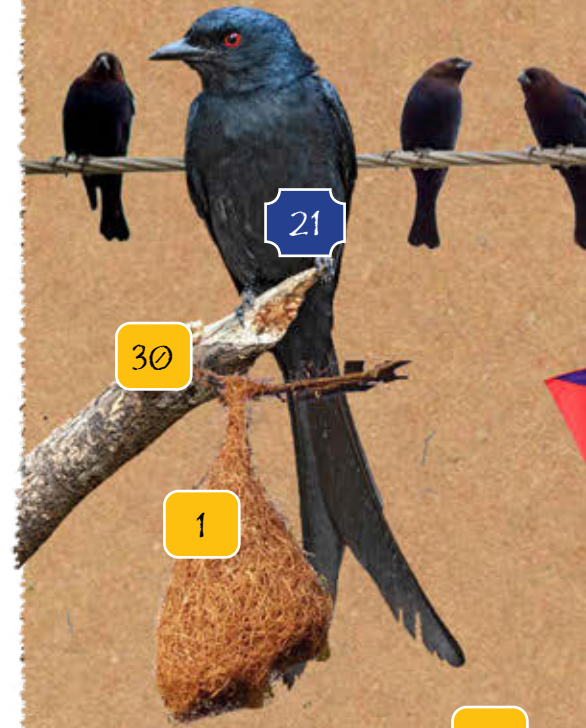
देखो भैया, गज़ब तमाशा  
भूमि में उग रहा है छाता

(ताफुकुकु)

सुडोकू-34

	1		3		8		
			8				4
		8		7	9		
	5			2	3	1	6
3		1	9			4	8
4		6	1	8	7	3	5
	9	3	5		1	7	8
7	8	4	3	9	2		5
	6	5	7				2

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए न जाएँ। साथ ही साथ, पीले बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर डब्बे में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।





# चित्र पहेली



बाएँ से दाएँ



ऊपर से नीचे

Crossword puzzle grid with numbers 1 through 32 indicating the start of words.

1		2					
			3			4	
5		6		7			8
9						4	
		3		11			12
14	15				16	17	
		19					18
				20			
					21		
22		23		24	25		
						16	
						26	27
		28			29		
					18	30	
31				32			

7

23

10

28

19

18

27

1

32

1

2

3

4

5

6

7

8

9

4

10

3

11

12

6

13

13

14

15

16

17

18

19

20

21

22

23

24

25

16

26

27

28

29

14

18

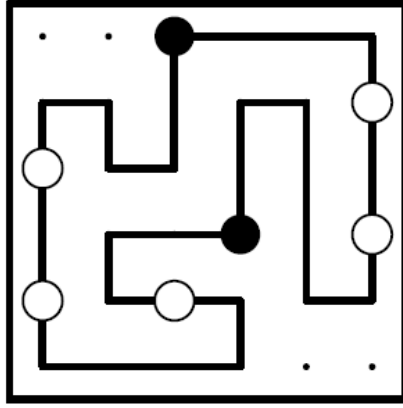
30

31

32

17

1.



2.

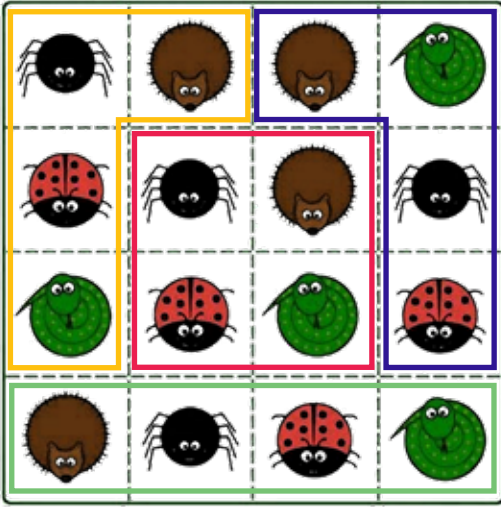
$$4^1 = 4$$

$$4^2 = 16$$

$$4^3 = 64$$

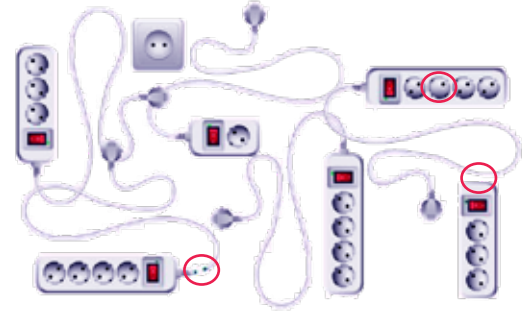
$$4^4 = 256$$

5.



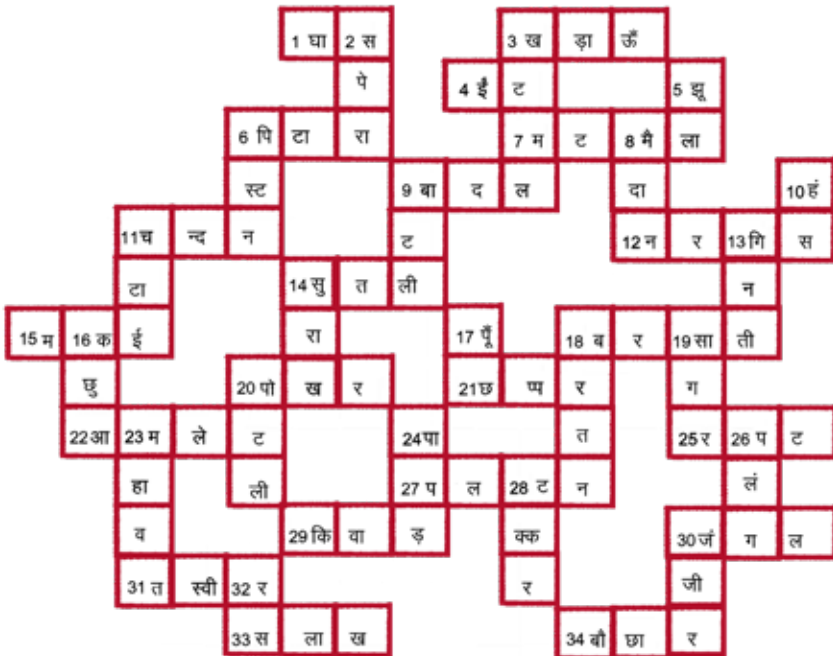
4.

ध्यान से देखो एक पॉवर स्ट्रिप का तार टूटा हुआ है। एक स्ट्रिप में तार है ही नहीं। एक स्ट्रिप में प्लग करने के लिए एक छेद नहीं है। इसके अलावा किसी भी स्ट्रिप के दो प्लग तो बाकी की दो स्ट्रिप को प्लग करने के काम आएँगे। तो कुल मिलाकर 8 प्लग बचेंगे।



6. पहाड़ी

जुलाई की चित्रपहेली का जवाब



सुडोकू-33 का जवाब

9	7	4	8	1	3	6	5	2
6	5	2	9	4	7	1	3	8
8	3	1	2	6	5	7	9	4
3	2	7	4	5	9	8	6	1
5	1	6	7	3	8	2	4	9
4	9	8	6	2	1	5	7	3
1	8	5	3	9	6	4	2	7
7	4	3	5	8	2	9	1	6
2	6	9	1	7	4	3	8	5

# ये है क्या ?

ये है क्या?  
ये ऊँट है या कि  
चलता हुआ पहाड़  
ये जिराफ है कि  
किसी ने झण्डा दिया गाड़  
ये नाच रहा मोर या कि  
फैला हुआ झाड़  
जंगल में रो रहा है कोई  
या रहा दहाड़  
चल रही है हवा  
या फिर कोई  
कागज़ रहा फाड़?

आलोक कुमार मिश्रा  
चित्र: इशिता देबनाथ बिस्वास

कितनी प्यारी सीपी! ये तो मुझे मेरे कलेक्शन में चाहिए ही चाहिए!



एक मिनट



मेरा नाम हर्मिट केकड़ा, और ये प्यारी सीपी जो कभी एक घोघे की थी अब मेरा घर है।



सिर्फ मेरी ही नहीं बल्कि और कई सारे समुद्री जीवों की ज़िन्दगी भी इन सीपियों पर निर्भर है।



जैसे, ये ओएस्टर का खोल अब घोघों के अण्डे डालने की जगह है।



मेरी बात सुनो!

रोहन चक्रवर्ती

और ये स्केलप का खोल अब कुछ एकार्न बार्नेक्लेस के रहने की जगह है।



और वो जो वहाँ कोनस दिख रहा है उसे अगर ज़िन्दा पकड़ा तो वो जानलेवा डंक मारता है।



तो ये सीपियाँ इकट्ठा करके आप न सिर्फ समुद्री जीवों की, बल्कि खुद की ज़िन्दगी भी खतरे में डाल रहे हो।



कुछ सीपियाँ खोखली होती हैं पर मैं यह उम्मीद करता हूँ कि आपका सिर खोखला नहीं है।



प्रकाशक एवं मुद्रक अरविन्द सरदाना द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म प्र से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।

सम्पादक: विनता विश्वनाथन